● देखो – पहचानो और चर्चा करो :

जन्मदिन

दोनों हैं परिवार की शान,
बेटा-बेटी एक समान ।

स्नेह, सहयोग का भाव अपार,
जन्मदिन का यही श्रेष्ठ उपहार ।

परंपरा से जन्मदिन हैं मना रहे, मिलकर सब 'हैपी बर्थ डे' गा रहे ।

अध्यापन संकेत : चित्रों का निरीक्षण कराएँ । वस्तुओं के नाम तथा व्यक्तियों की कृतियों पर प्रश्न पूछें । चित्रों में दिखाए गए व्यक्तियों के नामकरण विद्‌यार्थियों से कराएँ । उनके आपसी संबंध बताने के लिए कहें । 'जन्मदिन' पर पाँच वाक्य बोलने के लिए प्रेरित करें ।

● देखो, बताओ और कृति करो :

१. प्राकृतिक दृश्य

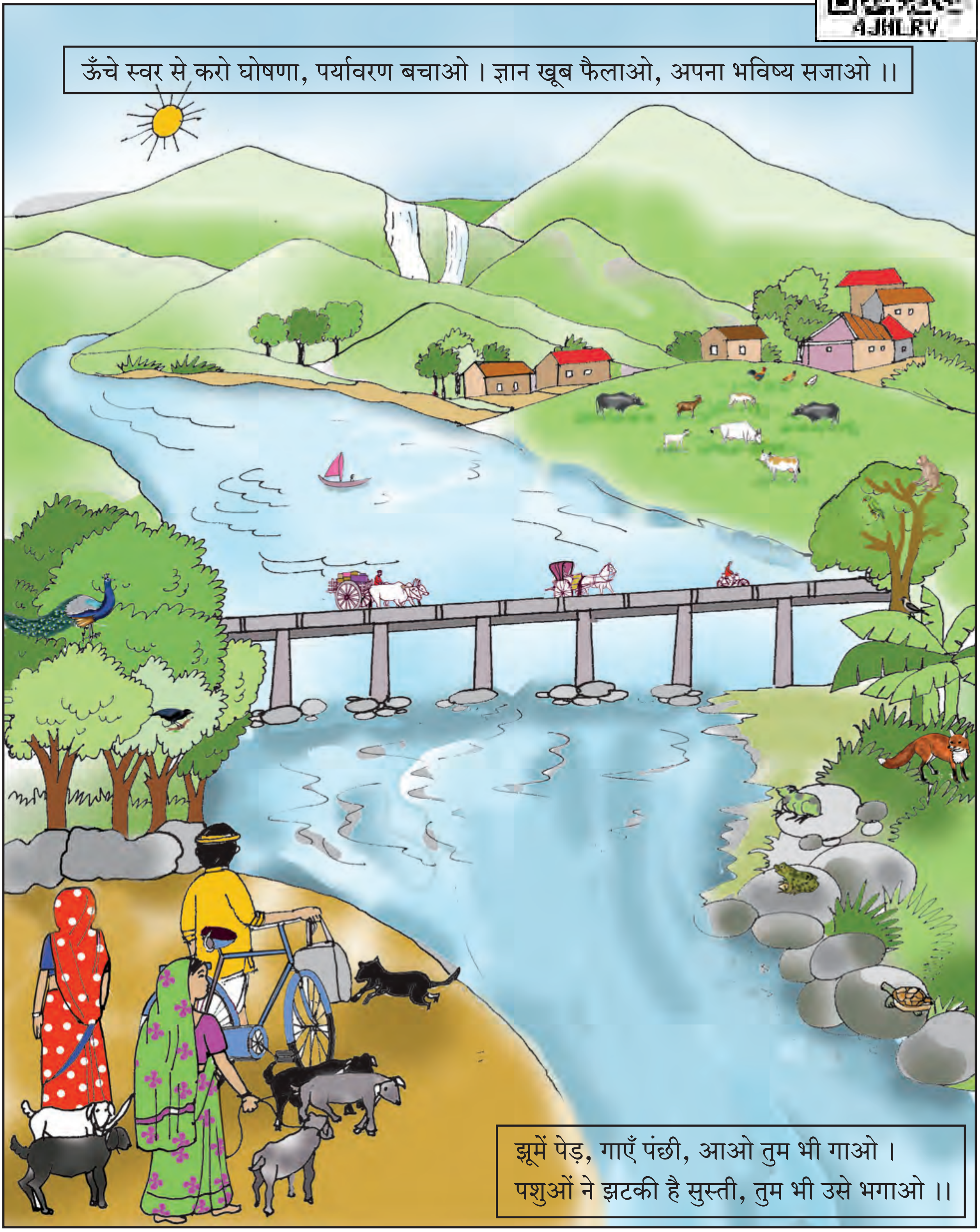

❑ चित्र का ध्यानपूर्वक निरीक्षण कराके पूछें कि इसमें क्या-क्या दिखाई पड़ रहा है । दिखाई देने वाले प्राणियों की बोलियाँ एकल, गुट एवं सामूहिक रूप से बुलवाएँ । विद्‌यार्थियों के दो गुट बनाकर उनसे अन्य प्राणियों और उनकी बोलियाँ बोलने की कृतियाँ कराएँ ।

पहली इकाई

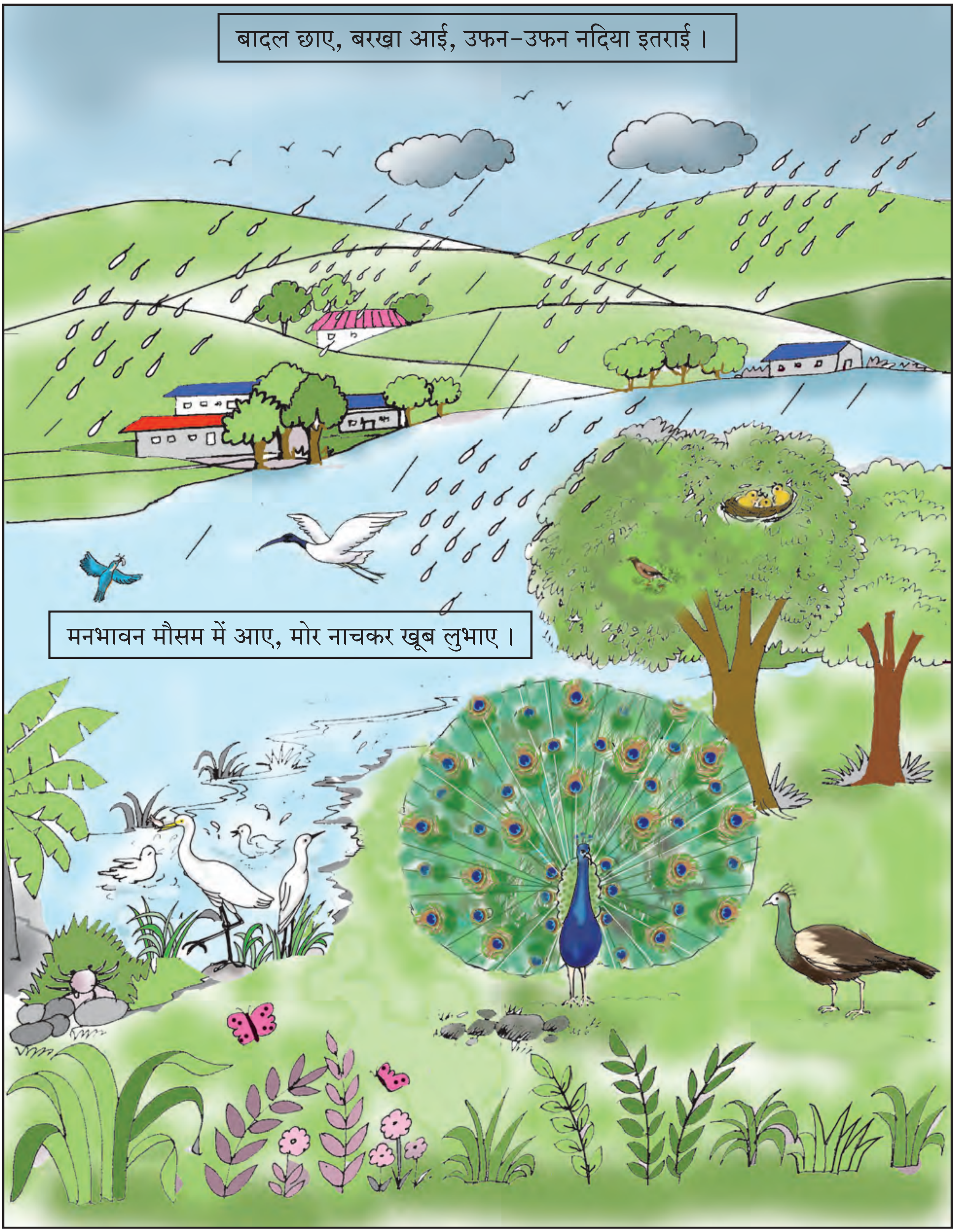

- विद्‌यार्थियों को चित्र के बारे में आठ-दस वाक्य बोलने के लिए प्रेरित करें । वर्षा के कारण उनके चारों ओर प्रकृति में कौन-कौन-से परिवर्तन होते हैं, उनसे बताने के लिए कहें । वर्षा में अपने भीगने के अनुभव लिखने के लिए प्रत्येक विद्‌यार्थी को प्रोत्साहित करें ।

- **सुनो, समझो और गाओ :**

२. पथ मेरा आलोकित कर दो

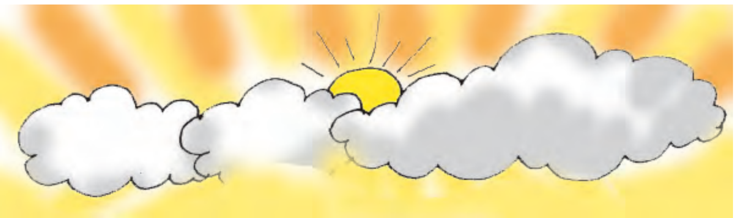

पथ मेरा आलोकित कर दो ।
नवल प्रात की नवल रश्मि से
मेरे उर का तम हर दो ॥

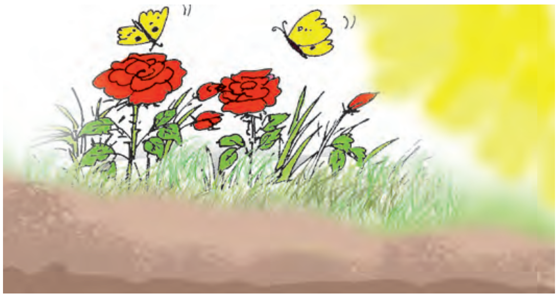

मैं नन्हा-सा पथिक विश्व के
पथ पर चलना सीख रहा हूँ,
मैं नन्हा-सा विहग विश्व के
नभ में उड़ना सीख रहा हूँ ।

पहुँच सकूँ निर्दिष्ट लक्ष्य तक
मुझको ऐसे पग दो, पर दो ॥

❑ उचित हाव-भाव, अभिनय के साथ कविता का सस्वर पाठ करें । विद्यार्थियों से कविता का अनुकरण पाठ कराएँ । उनसे कविता में समाहित भावों पर चर्चा करें । विद्यार्थियों से सामूहिक, गुट में एवं एकल रूप से कविता का साभिनय, सस्वर पाठ कराएँ ।

पंख बहुत नन्हे हैं मेरे
ऊँचा अधिक न उड़ पाता हूँ,
लक्ष्य दूर तक उड़ पाने का
प्राप्त नहीं मैं कर पाता हूँ ।

शक्ति मिले तो उड़ पाऊँ मैं
मेरे हित कुछ ऐसा कर दो ॥

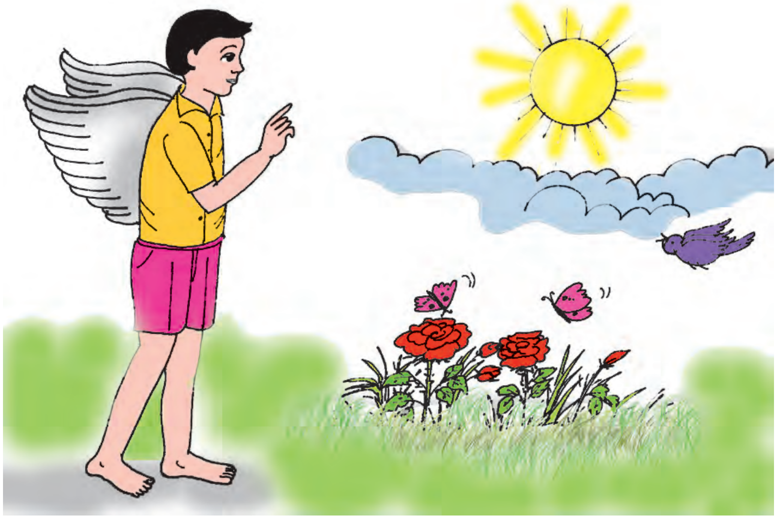

पाया जग से जितना अब तक
और अभी जितना मैं पाऊँ,
मनोकामना है यह मेरी
उससे कहीं अधिक दे पाऊँ ।

धरती को ही स्वर्ग बनाऊँ
मुझको यह मंगलमय वर दो ॥

– द्‌वारिका प्रसाद माहेश्वरी

❑ विद्‌यार्थियों से कविता में तुकांत शब्द ढूँढ़ने के लिए कहें । कविता में आए अनुनासिक (ँ) शब्दों का वाचन कराएँ । विश्व, पग, पंख, धरती आदि शब्दों के समानार्थी शब्द बताने के लिए प्रेरित करें । कविता में आए नए शब्दों का वाचन एवं लेखन कराएँ ।

स्वाध्याय हेतु अध्यापन संकेत – प्रत्येक पाठ के स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो', 'पढ़ो' के प्रश्नों के लिए सामग्री उपलब्ध कराएँ । यह सुनिश्चित करें कि विद्‌यार्थी स्वाध्याय नियमित रूप से कर रहे हैं । विद्‌यार्थियों के स्वाध्याय का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' भी करते रहें ।

स्वाध्याय

१. **त्योहार एवं शुभ अवसर पर गाया जाने वाला अपनी बोली का कोई गीत सुनाओ ।**

२. **एक वाक्य में उत्तर दो :**

(क) विश्व के पथ पर कौन चलना सीख रहा है ?
(ख) नवल रश्मि से क्या अपेक्षा की जा रही है ?
(ग) नन्हे पथिक को कैसे पग चाहिए ?
(घ) नन्हा विहग कहाँ उड़ना सीख रहा है?
(ङ) नन्हा विहग किसे स्वर्ग बनाने का वर माँग रहा है ?

३. **इस कविता के संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों को पढ़ो ।**

४. **कविता की पंक्तियाँ पूर्ण करो :**

(च) नवल प्रात की................................ मेरे उर का तम हर दो ।
(छ) मैं नन्हा-सा विहग .... उड़ना सीख रहा हूँ ।
(ज) पंख बहुत नन्हे हैं मेरे .... पाता हूँ ।
(झ) शक्ति मिले ....ऐसा कर दो ।
(ञ) मनोकामना है यह मेरी .... दे पाऊँ ।

५. **निम्नलिखित परिच्छेद में उचित स्थान पर उचित विरामचिह्न (' , ।, ?, " ", !) लगाकर पढ़ो :**

काबुलीवाले ने पूछा बिटिया अब कौन-सी चूड़ियाँ चाहिए मैंने अपनी गुड़िया दिखाकर कहा मेरी गुड़िया के लिए अच्छी सी चूड़ियाँ दे दो उसने मेरी गुड़िया के लिए हरी लाल पीली नीली चूड़ियाँ निकालीं फिर कहा बड़ी सुंदर है तुम्हारी गुड़िया बहुत महँगी होगी नहीं बाबा ये गुड़िया न महँगी है न ही बहुत सस्ती

६. **नीचे दिए गए 'स्वावलंबन' के चित्रों को देखो, समझो और चर्चा करो :**

७. **नदी, समुद्र आदि में लहरें उठती हैं । उन्हें देखकर तुम्हारे मन में कौन-से विचार आते हैं, बताओ ।**

● सुनो, समझो और सुनाओ :

३. असली गहने

बच्चो ! तुमने अपनी दादी-नानी से बहुत सारी कहानियाँ सुनी होंगी । आओ, आज मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ । कुछ वर्ष पहले की बात है । वीरसिंह नामक गाँव था । उस गाँव के छोटे-से परिवार में एक बालक रहता था । वह बड़ा ही सीधा-सादा, बुद्धिमान एवं होनहार था । उसकी माँ का नाम भगवती देवी था । पढ़ाई के साथ-ही-साथ वह दिन-रात अपनी माँ की सेवा में लगा रहता था । माँ भी उसे बहुत प्यार करती थीं । माँ का जीवन सादा जीवन, उच्च विचारवाला था । उन्हें तड़क-भड़क पसंद नहीं थी । उनका रहन-सहन बहुत ही साधारण था ।

एक रोज गाँव में बारात आई । गाँव की अधिकांश औरतें आभूषणों से सुसज्जित होकर बारात देखने गईं मगर उसकी माँ के पास एक भी गहना नहीं था । यही बात उसने एक उत्सव में भी देखी थी । अपनी माँ को वह नए-नए कपड़ों और गहनों से सजी-धजी देखना चाहता था पर क्या करता ! वह तो अभी छोटा था । उसने मन-ही-मन तय कर लिया कि बड़ा होकर वह भी अपनी माँ के लिए गहने जरूर बनवाएगा ।

एक रात भोजन करने के बाद माँ के पैर दबाते समय उसने मन की बात स्पष्ट करने के लिए पूछा, "माँ, तुम्हारे पास अच्छा कपड़ा और कोई गहना नहीं है न ?"

"नहीं तो ! मगर बात क्या है बेटा ?" माँ ने अचरज से पूछा ।

"माँ, मेरी इच्छा है कि तुम भी गाँव की अन्य औरतों की तरह नए कपड़े पहनो और गहनों से सज-धजकर किसी आयोजन में जाया करो ।" फिर बालक ने पुलकित होकर कहा, "माँ, बड़ा होने पर मैं तुम्हारे लिए अच्छे-अच्छे कपड़े लाऊँगा । तुम्हारे लिए गहने भी बनवाऊँगा ।"

"अच्छा, तो यह बात है," बेटे के प्यार में माँ का गला भर आया था ।

❑ विद्यार्थियों को कहानी सुनाकर मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । उपरोक्त कहानी अपने शब्दों में कहने के लिए प्रेरित करें । विद्यार्थी अपने माता-पिता एवं बुजुर्गों से क्या-क्या बातें करते हैं; यह कक्षा में परस्पर चर्चा करने और बताने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें ।

फिर मुस्कराते हुए उन्होंने कहा, "बेटे, परिश्रम से खूब पढ़ाई करो । बड़े बनो । तुम्हीं मेरे सबसे अच्छे गहने हो । आदमी गहनों और कपड़ों से नहीं बल्कि अपने व्यवहार और कर्म से बड़ा बनता है ।" बालक ने कहा, "पर माँ, मेरी बड़ी इच्छा है कि मैं तुम्हारे लिए गहने बनवाऊँ ।" माँ कुछ देर सोचती रहीं फिर बोलीं, "बेटा, यदि तुम्हें अपनी माँ से इतना ही प्यार है तो मेरे लिए बस तीन गहने बनवा देना ।"

"बस तीन ही, माँ ! पर कौन-कौन-से ?" बालक ने अधीरता से सवाल किया ।

"बेटे ! इस गाँव में विद्यालय नहीं है । विद्यालय दूर होने के कारण गाँव के बच्चे अशिक्षित रह जाते हैं । वे प्रगति नहीं कर पाते इसलिए गाँव में एक पाठशाला खुलवा देना । मरीजों के उपचार की कोई व्यवस्था

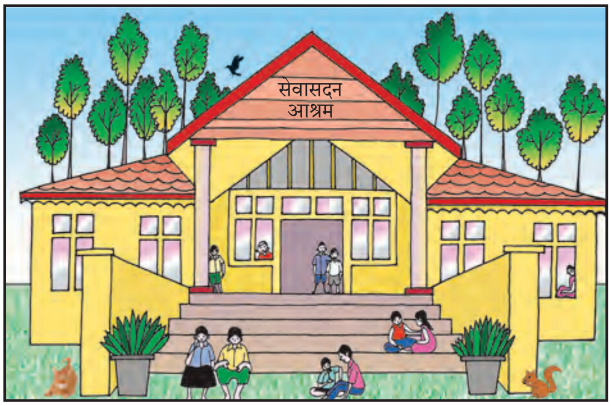

नहीं है यहाँ; उचित उपचार के अभाव में छोटे बच्चे एवं जवान अकाल मृत्यु के शिकार हो जाते हैं । अतः एक अस्पताल की स्थापना करवाना । गरीब-अनाथ बरसात में भीगते हैं । जाड़े में ठंड से ठिठुरकर अपनी रात गुजारते हैं । उनके रहने-खाने के लिए एक अनाथालय बनवा दो । बस यही तीन असली गहने मेरे लिए बनवा देना बेटा" माँ ने बेटे की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा । बेटे की आँखों में आँसू छलक आए । वह सोचने लगा, 'माँ कभी भी अपने लिए कुछ नहीं माँगतीं, हमेशा दूसरों के लिए ही चिंतित रहती हैं ।'

बालक ने माँ के पैर छुए और उसी दिन से माँ की इच्छा पूरी करने में जी-जान से लग गया । आगे चलकर उसने माँ की तीनों इच्छाएँ पूरी की । केवल इतना ही नहीं; उसने देश और समाज की भलाई के अनेक काम किए । जानते हो यह बालक कौन था ? यही बालक आगे चलकर ईश्वरचंद्र विद्यासागर के नाम से विख्यात हुआ । विद्यासागर जी ने अपना पूरा जीवन समाजसेवा के लिए समर्पित कर दिया ।

– दीनदयाल शर्मा, 'दिनेश्वर'

❑ विद्यार्थियों के गुट बनाकर पाठ में आए एवं अन्य उपसर्ग और प्रत्यययुक्त शब्द समझाएँ । शब्दों के पहले 'स', 'प्रति' आदि उपसर्ग तथा शब्दों के बाद 'ईय', 'दार' आदि प्रत्यय लगाकर शब्द तैयार करवाएँ । पाठ्यपुस्तक में आए ऐसे शब्दों की सूची बनवाएँ ।

स्वाध्याय

१. **अंधविश्वास दूर करने के विषय में सुनी हुई कोई कहानी सुनाओ ।**

२. **निम्नलिखित भाषाओं से संबंधित राज्यों के नाम दक्षिण से उत्तर दिशा के अनुसार बताओ :**

१. पंजाबी   २. तमिळ   ३. उड़िया   ४. कन्नड़   ५. मलयाळम

३. **जलचर प्राणियों से संबंधित जानकारी पढ़ो ।**

४. **एक वाक्य में उत्तर लिखो :**

(क) बालक कहाँ रहता था ?

(ख) गाँव की अधिकांश औरतें किस प्रकार सुसज्जित होकर बारात देखने गई थीं ?

(ग) बालक की क्या इच्छा थी ?

(घ) माँ भगवती देवी ने अपने बेटे से कौन-कौन-से गहने बनवाने के लिए कहा ?

(ङ) वह बालक किस नाम से प्रसिद्ध हुआ ?

५. **मुहावरों और कहावतों के अर्थ बताकर उनका वाक्यों में प्रयोग करो :**

(च) तिल का ताड़ बनाना ।

(छ) ठहाका लगाना ।

(ज) दंग रह जाना ।

(झ) नाच न जाने आँगन टेढ़ा ।

(ट) नौ नगद न तेरह उधार ।

(ठ) नेकी कर दरिया में डाल ।

4K1DV6

६. **'वृद्‌धों एवं विकलांगों के प्रति आस्था' संबंधी नीचे दिए गए चित्रों को समझो और चर्चा करो :**

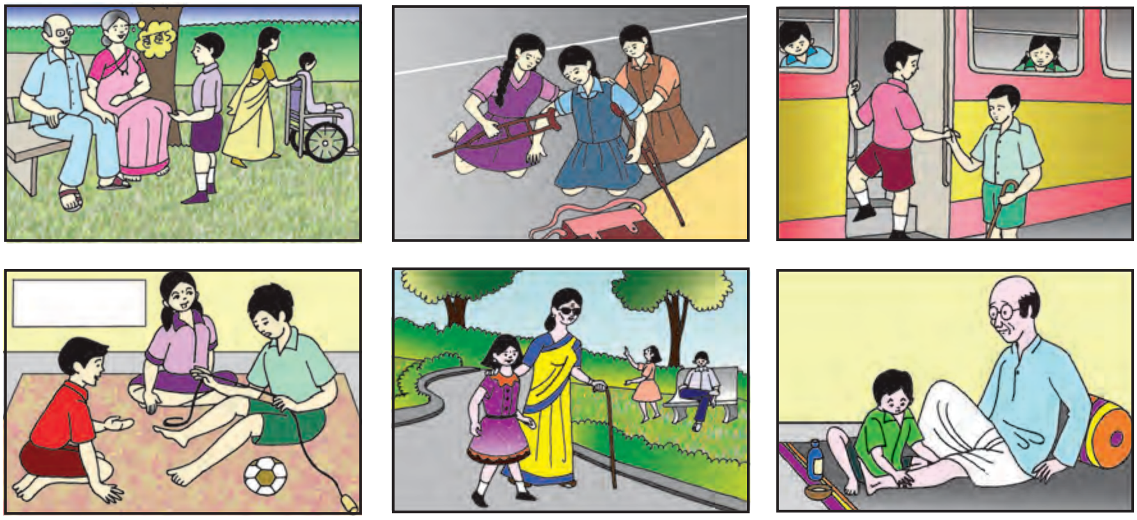

७. **तुम्हारे मित्र के बारे में तुम्हारे अभिभावकों की राय अच्छी नहीं है, ऐसे में तुम क्या करोगे, बताओ ।**

● अंतर बताओ :

४. कश्मीरा

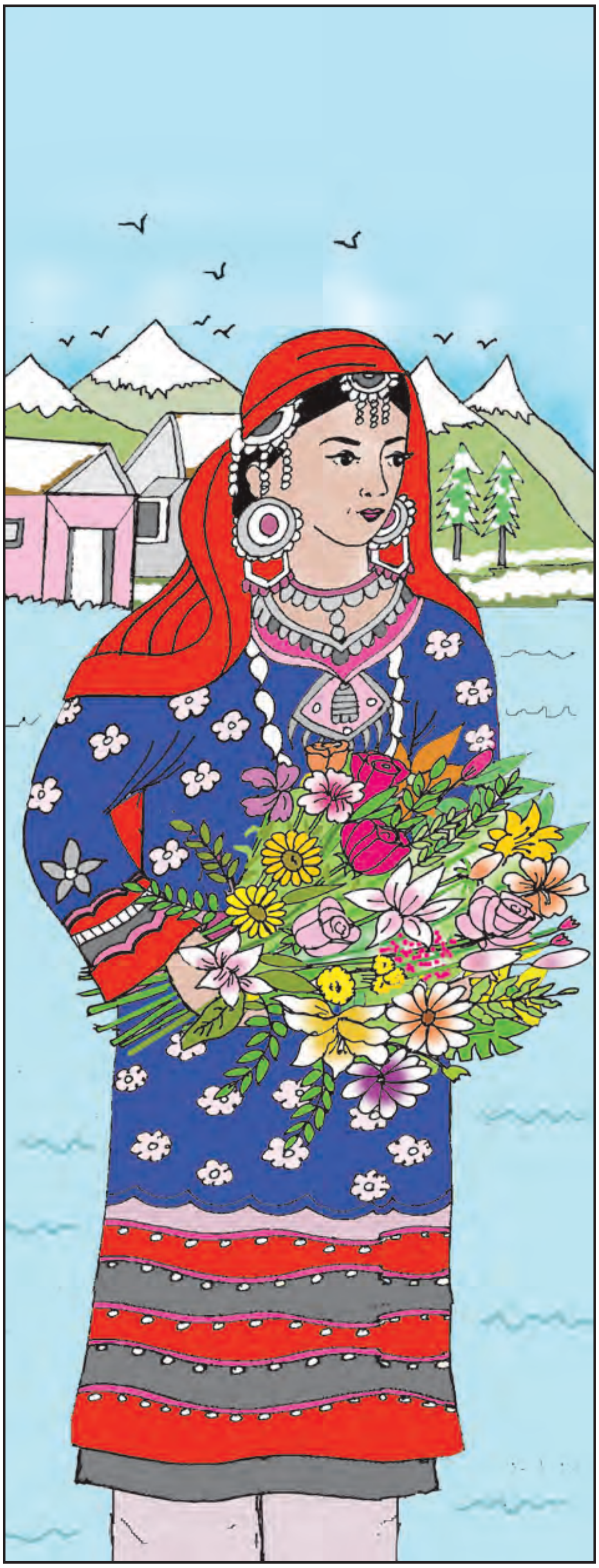

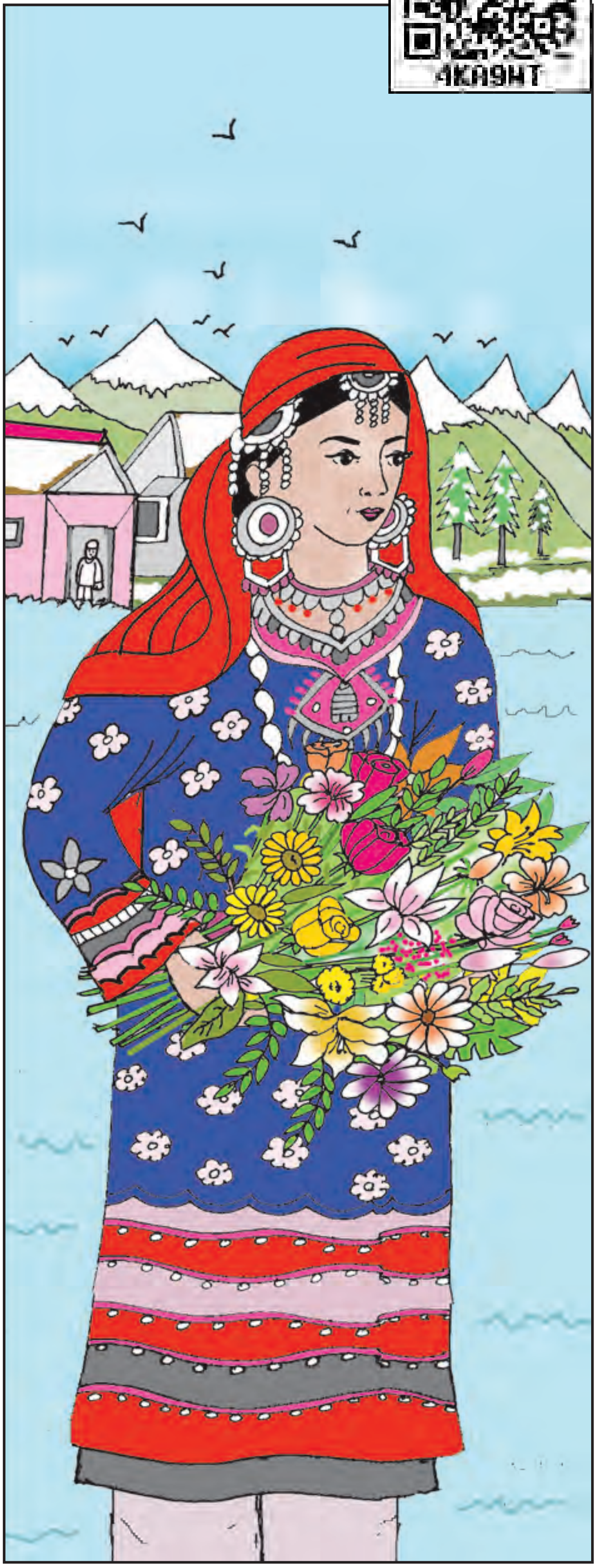

❑ ऊपर के दोनों चित्रों का सूक्ष्म निरीक्षण कराएँ । दोनों चित्रों में दस अंतर ढूँढ़कर बताने के लिए कहें । विद्यार्थियों को भारत के अलग-अलग राज्यों की वेशभूषा और आभूषणों की जानकारी प्राप्त करने तथा उनके चित्रों का संग्रह करने के लिए प्रेरित करें ।

● पढ़ो, समझो और बोलो :

५. बात से बात

(मंच पर सभी पात्र बैठे हैं । प्रश्नोत्तर का क्रम चल रहा है ।)

चाचा जी : बच्चो ! हम तुमसे कुछ सरल और मजेदार प्रश्न पूछते हैं । एक वायुयान इंदौर से मुंबई जाता है तो उसे एक घंटा बीस मिनट लगते हैं । जब मुंबई से इंदौर आता है तब उसे अस्सी मिनट लगते हैं । ऐसा क्यों ? कौन फटाफट उत्तर देगा ?

स्वानंद : चाचा जी, एक घंटा बीस मिनट और अस्सी मिनट दोनों ही बराबर होते हैं । अच्छा, अब मैं एक प्रश्न पूछता हूँ । बताइए कि हमने एक मटका नल के नीचे रखा है । पानी भी आ रहा है; फिर भी क्या कारण है कि मटका नहीं भरता ?

इमाद : इसलिए कि मटके में बड़ा छेद है फिर वह भरेगा कैसे ? अच्छा ! अब यह बताओ कि चौके में रखी हुई वह कौन-सी वस्तु है जो फटने पर आवाज नहीं करती ?

स्वर्णिमा : इसका उत्तर है दूध । चाचा जी, ठीक कहा न ?

चाचा जी : हाँ, बिलकुल ठीक । अच्छा भाई, बताओ कि किन संकेतों को करते रहने से बातचीत आगे बढ़ती है और किन बातों को करते रहने से झगड़ा हो जाता है ?

स्वामी : मैं बताता हूँ । हाँ-हाँ, हूँ-हूँ करते रहने से बातचीत आगे बढ़ती रहती है और तू-तू मैं-मैं अर्थात आरोप-प्रत्यारोप करते रहने से झगड़ा हो जाता है ।

चाचा जी : अच्छा, अब एक और किंतु आखिरी प्रश्न हम पूछ रहे हैं । बताओ, कार्यक्रम के अंत में वह कौन-सा काम है जो दो हाथों के बिना संभव नहीं होता ?

सभी बच्चे : ताली बजाना ।

चाचा जी : बहुत अच्छे ! इसी बात पर सब बच्चे ताली बजाओ ।

❑ पाठ का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से पाठ का वाचन कराएँ । संवादों का नाट्यीकरण कराएँ । उन्हें किसी कार्यक्रम में चुटकुले/हास्य कथा सुनाने के लिए प्रोत्साहित करें । पिछले सप्ताह किस बात पर वे खूब हँसे थे, उन्हें क्रमशः बताने के लिए प्रेरित करें ।

स्वाध्याय

१. खेल के बारे में किसी से सुना हुआ कोई प्रेरक अनुभव सुनाओ ।

२. दूरदर्शन से लाभ एवं हानि पर समूह में चर्चा करते हुए अपने विचार व्यक्त करो ।

३. समाचारपत्र में प्रकाशित मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक विज्ञापन पढ़ो ।

४. किसने–किससे कहा, लिखो :

(क) "हम तुमसे कुछ सरल और मजेदार प्रश्न पूछते हैं ।"

(ख) "अच्छा, अब मैं एक प्रश्न पूछता हूँ ।"

(ग) "एक घंटा बीस मिनट और अस्सी मिनट दोनों बराबर होते हैं ।"

(घ) "इसलिए कि मटके में बड़ा छेद है; फिर वह भरेगा कैसे ?"

(ङ) "आरोप–प्रत्यारोप करते रहने से झगड़ा हो जाता है ।"

५. नीचे आए शब्दों के संयुक्ताक्षरों में कौन–से वर्ण पूर्ण और कौन–से अपूर्ण हैं, बताओ :

(च) सर्वोदय, अब्राहम, राष्ट्र, व्यर्थ ।

(छ) वस्तु, अच्छा, प्याज, गुप्त, सत्य ।

(ज) रक्त, गिरफ्तार, डॉक्टर, दफ्तर ।

(झ) गट्ठर, चिह्न, विद्‍यालय ।

(ञ) साम्य, पेन्सिल, मान्यता ।

६. नीचे दिए गए 'प्रकृति' संबंधी चित्रों को समझो और चर्चा करो :

७. 'मोटू–पतलू', 'डोरेमॉन', 'छोटा भीम' धारावाहिकों के कौन–से पात्र तुम्हें अच्छे लगते हैं, क्यों, बताओ ।

● सुनो, पढ़ो और लिखो :

६. मेरा बचपन

मेरे पिता जी कुटुंबप्रेमी, सत्यप्रिय और बहुत ही उदार थे । वे पोरबंदर के दीवान थे । उनका नाम करमचंद था । वे रिश्वत से दूर भागते थे इसलिए निष्पक्ष न्याय करते थे । वे राज्य के प्रति बड़े वफादार थे । मेरी माँ का नाम पुतलीबाई था । मेरे मन पर यह छाप है कि माता जी साध्वी स्त्री थीं । बड़ी भावुक, पूजा-पाठ के बिना कभी भोजन न करतीं । व्रत-उपवास उनके जीवन के अंग बन गए थे । माता जी व्यवहार कुशल थीं । दरबार की सब बातें जानती थीं । बचपन में माँ मुझे कभी-कभी अपने साथ राजमहल ले जाया करती थीं । ऐसे माता-पिता के यहाँ संवत १९२५ की भादों बदी द्‌वादशी के दिन अर्थात सन १८६९ के अक्तूबर की दूसरी तारीख को पोरबंदर में मेरा जन्म हुआ । बचपन वहीं बीता ।

मुझे राजकोट की ग्राम पाठशाला में पढ़ने भेजा गया । तब मेरी उम्र सात बरस की रही होगी । मेरी गिनती शायद साधारण श्रेणी के विद्‌यार्थियों में रही होगी । सभी शिक्षकों के नाम-धाम मुझे आज भी याद हैं । मैं अपने शिक्षकों का बड़ा आदर करता था । उनके प्रति मेरा आदर कभी घटा नहीं । बड़ों के दोष न देखने का गुण मुझमें स्वाभाविक रूप से था । मैंने समझ रखा था कि बड़ों की आज्ञा का पालन करना चाहिए । जो वे कहें; वह करना चाहिए । जो करें उसका काजी मुझे नहीं बनना चाहिए । इसी समय के दो प्रसंग सदा मुझे याद रहे हैं । पिता जी की खरीदी हुई एक किताब पर मेरी नजर पड़ी । वह 'श्रवण-पितृभक्ति' नामक नाटक था । उसे बड़े चाव से पढ़ गया । उन दिनों बाइस्कोप दिखाने वाले

❑ प्रथम परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । विद्‌यार्थियों से सामूहिक एवं एकल मुखर वाचन और सामूहिक मौन वाचन कराएँ । पाठ में समाविष्ट प्रसंगों पर प्रश्न पूछें और उनपर चर्चा करें । विद्‌यार्थियों को उनके बचपन के विशेष अनुभव बताने के लिए प्रेरित करें ।

दरवाजे पर फिरा करते थे । उसमें मैंने श्रवण द्‌वारा अपने माता-पिता को काँवड़ में बिठाकर यात्रा पर ले जाने का चित्र भी देखा । दोनों चीजों का मुझपर गहरा असर पड़ा । मुझे भी श्रवण के समान होना चाहिए, यह भाव मन में उठने लगा । इसी बीच कोई नाटक कंपनी आई । मुझे उसका नाटक देखने की इजाजत मिली । उसमें हरिश्चंद्र की कथा थी । यह नाटक देखने से मेरी तृप्ति नहीं होती थी । हरिश्चंद्र के सपने आया करते । 'हरिश्चंद्र जैसे सत्यवादी सब क्यों नहीं हो जाते ?' यह धुन लगी रहती । मेरे मन में हरिश्चंद्र और श्रवण आज भी जीवित हैं । मैं इनके आधार पर अपने आचरण पर सदैव ध्यान देने लगा । मुझे याद नहीं है कि मैंने कभी किसी शिक्षक या लड़के से झूठ बोला हो । सत्य पर टिके रहना, बड़ों का आदर करना तथा उनके प्रति सेवाभाव के साथ-ही-साथ दीन-दुखियों के दर्द को अपना समझना; आज भी मेरे जीवन का मूल मंत्र बना हुआ है ।

मैंने पढ़ा था कि खुली हवा में घूमना स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयोगी होता है । मैंने सैर करने की आदत डाल ली । इससे मेरे शरीर में कसाव आ गया । पढ़ाई में अक्षर अच्छे होने की जरूरत नहीं है, पता नहीं यह गलत विचार मेरे मन में कैसे बैठ गया था । इस भूल की सजा आज भी मेरे मन को मिल रही है । दूसरों के मोती जैसे अक्षर देखकर मैं अपनी लिखावट पर बहुत पछताता हूँ । बाद में मैंने अपनी लिखावट सुधारने का प्रयत्न किया किंतु तब तक बहुत देर हो चुकी थी । बचपन में मुझे खेलों में रुचि नहीं थी । हमारे विद्‌यालय में ऊपर की कक्षा के विद्‌यार्थियों के लिए व्यायाम और क्रिकेट को अनिवार्य कर दिया गया था । मेरा मन इनमें नहीं लगता था । अब मुझे यह लगता है कि खेल और व्यायाम के प्रति मेरी यह अरुचि एक गलती थी । पढ़ने के साथ खेल एवं व्यायाम करना भी बहुत जरूरी है । बाद में समझ में आया कि विद्‌याभ्यास में व्यायाम अर्थात शारीरिक शिक्षा को मानसिक शिक्षा के बराबर ही स्थान होना चाहिए ।

कुछ गलत मित्रों की सोहबत से मुझे 'कश' खींचने का शौक हो गया । पैसा पास न होने के कारण हमने चाचा के पीकर फेंके गए सिगरेट के टुकड़े चुराना शुरू कर दिए । कुछ समय बाद अपनी गलती का अहसास हो गया और सिगरेट पीने की आदत भी जाती रही । बड़े होने पर मुझे कभी सिगरेट पीने की इच्छा ही नहीं हुई । मेरी यह सदैव धारणा रही कि किसी भी नशे की आदत जंगली, गंदी और हानिकारक है । सिगरेट-बीड़ी का इतना जबरदस्त शौक दुनिया में क्यों है, इसे मैं कभी समझ ही नहीं सका । प्रत्येक बाल, युवा, प्रौढ़ को किसी भी नशे से बचना चाहिए ।

- मोहनदास करमचंद गांधी

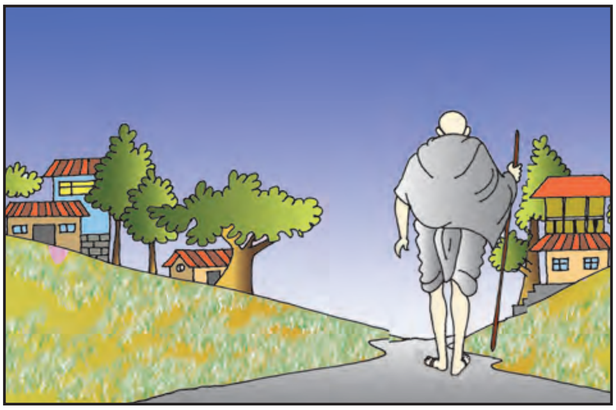

❑ विद्‌यार्थियों से गांधीजी के जीवन के महत्त्वपूर्ण प्रसंगों के बारे में बताने के लिए कहें । महान विभूतियों की जीवनी पढ़ने हेतु उन्हें प्रेरित करें । पाठ में आए स्थानों, व्यक्तियों, वस्तुओं, अवस्थावाले संज्ञा शब्दों को ढूँढ़ने के लिए कहें । इनके स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों पर चर्चा करें । किसी भी लत/नशे से होने वाली हानियों, घातक परिणामों के बारे में विद्‌यार्थियों का मार्गदर्शन करें ।

स्वाध्याय

१. **लोकमान्य टिळक के जीवन का कोई प्रसंग सुनो ।**

२. **व्यायाम/खेल के लाभ पर चर्चा करो ।**

३. **विद्‌यालय के सूचना फलक पर लिखी सूचनाएँ पढ़ो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

(ख) बचपन में गांधीजी के जीवन पर किन-किन बातों का प्रभाव पड़ा ?

(ग) गांधीजी के जीवन का मूल मंत्र क्या था ?

(घ) गांधीजी ने पढ़ने के साथ खेल और व्यायाम को जरूरी क्यों बताया है ?

(ङ) नशे के बारे में गांधीजी की सदैव कौन-सी धारणा रही ?

५. **मोटे टाइपवाले शब्दों के वचन परिवर्तन करके वाक्य पुनः बोलो :**

(च) **मैं** अपने शिक्षकों का बड़ा आदर करता था ।

(छ) पिता जी द्‌वारा खरीदी हुईं **किताबों** पर मेरी नजर पड़ी ।

(ज) हरिश्चंद्र **के सपने** आया करते ।

(झ) **हमारे** विद्‌यालय में ऊपर की कक्षा के विद्‌यार्थियों के लिए व्यायाम अनिवार्य था ।

(ञ) बचपन में **मुझे** खेलों में रुचि नहीं थी ।

६. **'गहन विश्लेषणात्मक विचार' वाले चित्रों को देखो, समझो और चर्चा करो :**

७. **खो-खो खेलते समय तुम्हारा धक्का लगने से साथी खिलाड़ी जोर से गिर पड़ा है, तुम क्या करोगे ?**

● **पढ़ो, समझो और कृति करो :**

७. शुभकामना कार्ड

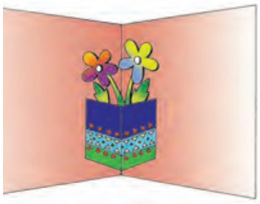

शुभ अवसरों पर हम एक-दूसरे को बधाई देते हैं, अभिनंदन करते हैं । शुभकामना एवं बधाई कार्ड देने की भी परंपरा है । आओ, हम यहाँ शुभकामना कार्ड बनाना सीखें :

सामग्री : ड्रॉइंग पेपर, विभिन्न रंगों के कागज, गोंद, कैंची, टिकलियाँ, रंगीन पेन्सिलें ।

कार्ड बनाने की विधि–

३५ सेमी लंबा एवं १२ सेमी चौड़ा ड्राइंग पेपर काट लो । लंबे भाग को बीच से मोड़ लो । अब १७ सेमी लंबा और ७ सेमी चौड़ा दूसरा ड्राइंग पेपर काट लो । लंबे भाग को बीच से मोड़ लो । मोड़ने के बाद पेपर को एक-एक सेमी भीतर से मोड़ लो । भीतर से मोड़े हुए भाग पर गोंद लगाओ और बड़े फोल्डर के भीतर मोड़ी हुई विपरीत दिशा में चिपका दो । अब बड़े फोल्डर के भीतर दूसरा फोल्डर चिपक गया । रंगीन कागज से फूल और पत्ते काट लो । फूल और पत्तों को छोटे फोल्डर के भीतर चिपका लो । बड़े फोल्डर में शेष जगह पर बधाई/शुभकामना शब्द लिख लो । बाहर से अलग-अलग रंग के फूल और डिजाइन के अगल-बगल में टिकलियाँ चिपका लो । नीचे के भाग पर फूल-पत्तियों का चित्र बनाकर उसमें रंग भर लो ।

अब तुम्हारा बधाई/शुभकामना कार्ड तैयार हो गया है । यह कार्ड उचित अवसर पर अपने मित्र/अपनी सहेली, बड़े/छोटों को दो ।

❑ पाठ का मुखर वाचन कराएँ । 'शुभकामना कार्ड' बनाने की सामग्री एवं प्रक्रिया पर चर्चा करें । पूर्वसूचना द्‌वारा सामग्री मँगवाकर विद्‌यार्थियों से कक्षा में शुभकामना कार्ड बनवाएँ । उनसे अलग-अलग अवसरों से संबंधित शुभकामना लिखने हेतु कहें । बधाई, अभिनंदन एवं स्वागत करने के कौन-से अवसर हो सकते हैं, इनपर चर्चा करें । इन प्रसंगों पर कार्ड बनाकर परिवार के सदस्यों, मित्रों को देने के लिए कहें । कार्ड में सही शब्दों के उचित जगहों पर प्रयोग एवं लेखन हेतु प्रेरित करें । आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें ।

● **सुनो, समझो और लिखो :**

८. अपनापन

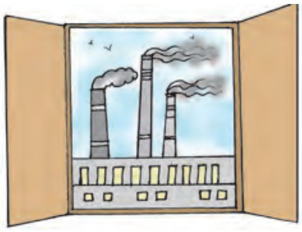

मथुरा के निकट एक गाँव में चारपाई पर रामदास जी पड़े हैं । उम्र लगभग ८५ वर्ष की हो गई होगी । शरीर अशक्त, उठना-बैठना दूभर हो गया है । पड़े-पड़े जोर से बड़बड़ा उठे, "गजा ! गजा ! तू कहाँ है ?" आवाज सुनकर उनका बेटा आजाद पास आकर बोला, "बापू क्या हुआ ? कुछ चाहिए क्या ?" उसने सहारा देकर पिता जी को बिठाया । पीठ सहलाते हुए बोला, "कुछ खाएँगे ?" रामदास की तंद्रा टूटी । बोले, "नहीं रे ! गजा की बहुत याद आ रही है ।"

'गजा' नाम सुनते ही आजाद के स्मृति पटल पर गजानन चाचा और अपने पिता की मित्रता किसी चलचित्र की भाँति घूम गई । गजानन चाचा आते ही बोलते, 'पाढे म्हण बघू' । रामदास एवं गजानन दोनों गहरे मित्र थे । उनका 'ड्यूटी' पर साथ-साथ जाना-आना, घूमना-फिरना, उठना-बैठना सभी बातें एक-एक कर उसे याद आने लगीं । बापू ने अनगिनत बार उसके नामकरण की कहानी सुनाई थी । उसका जन्म '१५ अगस्त' को हुआ था । रामदास बच्चे का नाम 'अगस्त' रखना चाहते थे । गजानन अड़ गए । बोले, "त्याचा जन्म आजादी दिन ला झाला आहे म्हणून नाम आजादच पाहिजे ।" रामदास के मौन रह जाने पर गजानन बोले, "बारसं मी करणार आणि नाव पण मीच ठेवणार ।" माँ बताती थीं कि फिर तो बापू की एक न चली । 'बरही' बड़ी धूमधाम से मनाई गई और नाम भी वही रखा गया जो गजानन चाचा चाहते थे । आस-
-पड़ोस में ही नहीं चाल में भी 'गजाभाऊ' और 'राम भैया' के किस्से मशहूर थे । होली हो या दिवाली, गणेशोत्सव हो या गोपाळकाला इन दोनों की ही धूम रहती थी । एक-दूसरे के

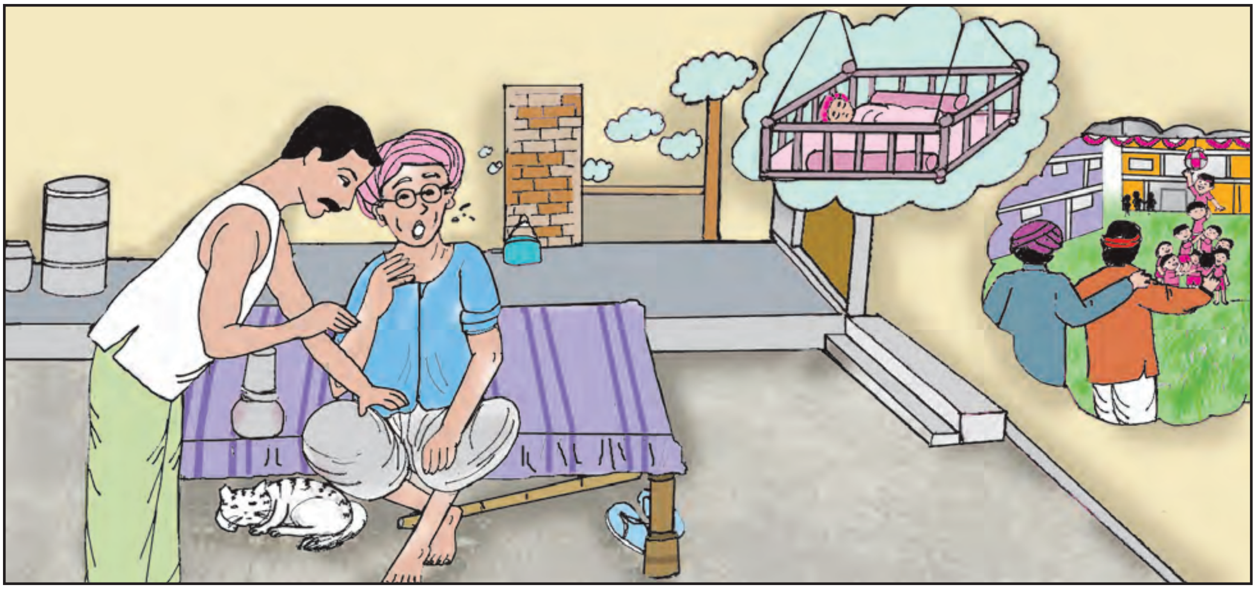

❑ विद्यार्थियों से पाठ का मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । पाठ के पात्रों के बारे में पूछें, चर्चा करें । विद्यार्थियों से उनके शब्दों में कहानी कहलवाएँ । पाठ के शब्दयुग्मों की सूची बनाने के लिए कहें । बोली भाषा के शब्दों के हिंदी मानक रूप लिखने के लिए सूचित करें ।

सुख-दुख में खड़े रहना, तीज-त्योहार में सहभागी होना इनका स्वभाव बन गया था । गजानन के छोटे भाई का विवाह होने वाला था । रामदास ने गजानन से कहा, "वह मेरा भी छोटा भाऊ है । उसके लगन की सारी व्यवस्था 'माझी' ही होगी ।" गजानन उसकी मराठी सुनकर हँस पड़े, बोले, "लगीन मुंबईत नाही रत्नागिरीला आहे ।" रामदास रत्नागिरी जाने के लिए तैयार हो गया । दस दिन की छुट्टी माँगने के लिए 'सुपरवाइजर' के 'ऑफिस' गया । सुपरवाइजर देखते ही बोल पड़ा, "नो लीव । तुम्हें ड्यूटी पर हजर रहना पड़ेगा । छुट्टी नहीं मिलेगी ।" रामदास बिफर पड़े । बोले, "मैं चला । मेरे भाऊ की शादी है । नौकरी जाए तो जाए ।" बाद में गजानन ने दोनों की सुलह-सपाटी करवाई ।

रामदास और गजानन के घर का कोई भी काम ऐसा न था जिसमें दोनों परिवार सम्मिलित न होते थे । एक-दूसरे का सहयोग करना, हाथ बँटाना, समय-कुसमय में हर ढंग से सहयोग करना उन दोनों के स्वभाव की विशेषता बन गई थी । नौकरी से निवृत्ति के बाद दोनों अपने-अपने गाँव मथुरा और रत्नागिरी चले गए । धीरे-धीरे उनमें संपर्क कम होता गया लेकिन अपनापन वैसा ही था ।

रामदास अचानक बहुत बीमार पड़ गए । उन्हें आज गजाभाऊ की बहुत याद आ रही थी । अचानक दरवाजे पर आवाज सुनाई पड़ी, "राम भैया कुठे आहेस तू ?" रामदास को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ । सामने देखता है कि सिर पर साफा बाँधे गजानन खड़े हैं । रामदास के शरीर में एकाएक उत्साह आ गया । उठकर वह गजाभाऊ से लिपट गए । बहुत देर तक दोनों की आँखों से प्रेमाश्रु झरते रहे । गजानन बोले, "मथुरा आया था । सोचा, यह सुदामा अपने मित्र कृष्ण से मिलता चले ।" दोनों पुनः एक-दूसरे से लिपट गए । रामदास ने गजानन को एक सप्ताह के लिए अपने घर पर ही रोक लिया । नई-पुरानी, सुख-दुख की बातें चलती रहीं । बेटे ने दोनों को मथुरा, वृंदावन के दर्शन करवाए । अंत में बड़े रुँधे गले से रामदास ने गजानन को विदा किया ।

❑ विद्यार्थियों से पाठ में आए मराठी, अंग्रेजी शब्दों, वाक्यों को खोजने के लिए कहें । इनका हिंदी में अनुवाद कराएँ । हिंदी-मराठी में प्रयुक्त होने वाले समोच्चारित समानार्थी एवं भिन्नार्थी शब्दों पर चर्चा करें, सूची बनवाएँ । हिंदी-अंग्रेजी के समोच्चारित शब्द पूछें ।

स्वाध्याय

१. किसी खिलाड़ी के बारे में सुनो ।

२. नीचे दिए गए शब्दों में से असंबद्ध शब्द बताओ :

दरवाजा, खिड़की, रोशनदान, गाय; आम, दूध, घी, दही; मक्खन, गेहूँ, चावल, दाल ।

३. जमीन के भीतर निवास करने वाले पाँच प्राणियों के बारे में पढ़ो । उनके चित्र और जानकारी अपनी कृतिपुस्तिका में चिपकाओ ।

४. हिंदी में अनुवाद करके लिखो :

(क) केल्याने होत आहे रे, आधी केलेचि पाहिजे.

(ख) प्रकाशातले तारे तुम्ही अंधारावर रुसा, हसा, मुलांनो हसा.

(ग) Time and tide wait for none.

(घ) Actions speak louder than words.

५. (च) नीचे दिए गए शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखो :

दूर, अशक्त, मौन, मित्रता, दुर्गति, बिछड़ना, छोटा, व्यवस्था, अस्त, अंत, कठिन, प्रकाश ।

(छ) नीचे दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द लिखो :

उपयोग, पीड़ा, संगति, साधारण, प्रभाव, व्यायाम, काका, शक्ति, चंद्रमा, वृक्ष, पानी ।

६. नीचे दिए गए 'सौंदर्य दृष्टि' संबंधी चित्रों को देखो, समझो और चर्चा करो :

७. कोई परिचित व्यक्ति रो रहा है । उसे देखकर तुम्हें क्या अनुभव होता है, उसके लिए तुम क्या करोगे, बताओ ।

● अनुलेखन करो :

९. (अ) अक्षरमाला

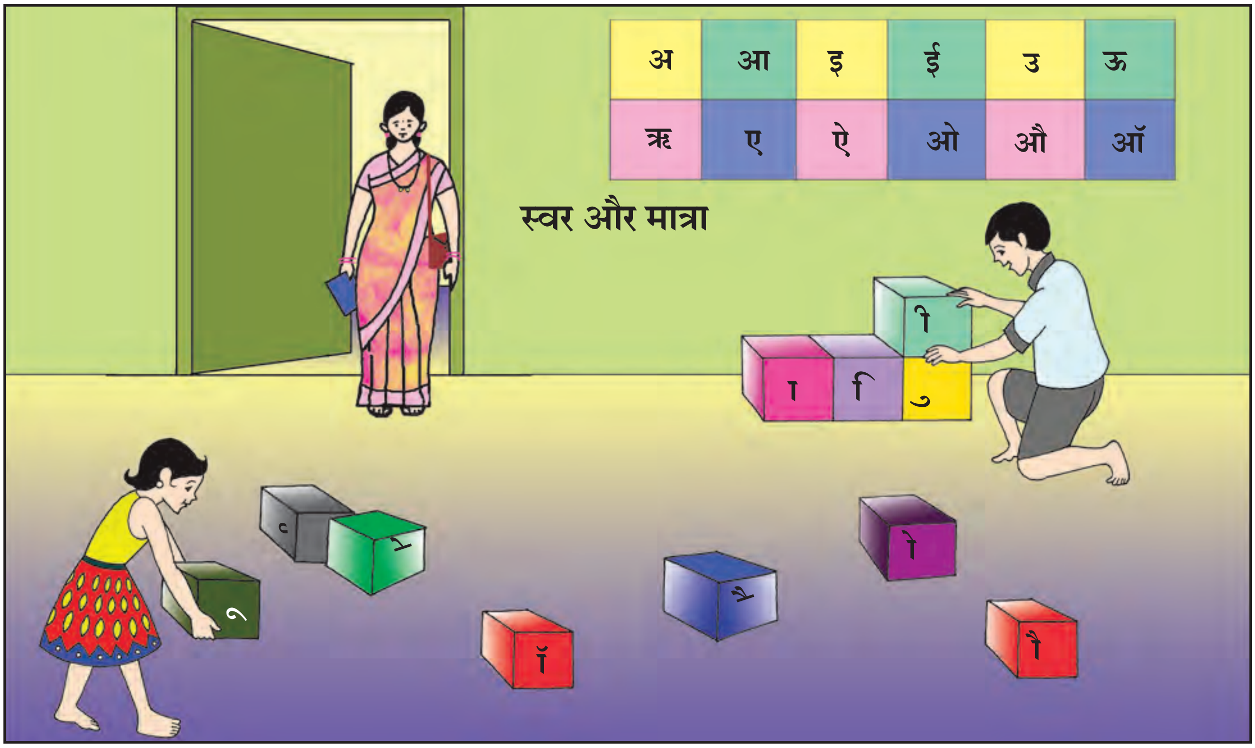

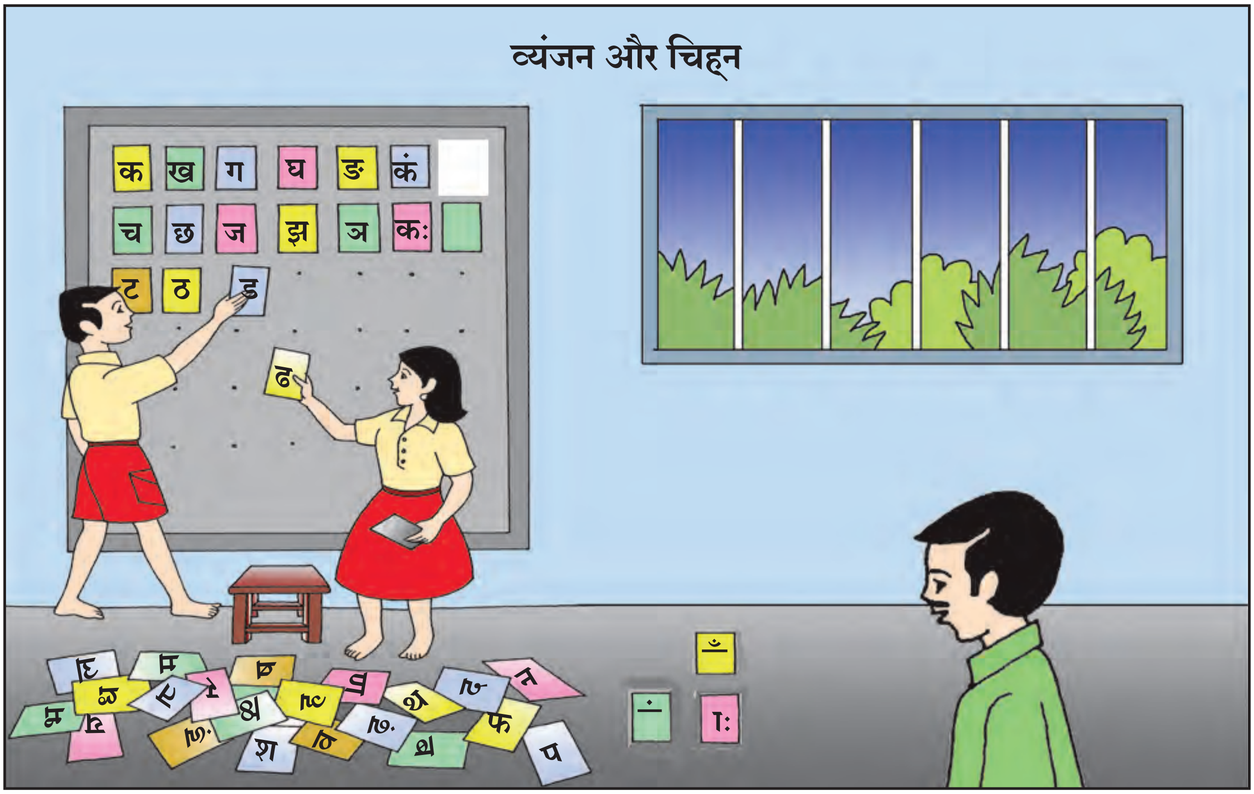

❑ ऊपर दिए गए वर्णों का शुद्ध वाचन करके विद्यार्थियों से शुद्ध अनुवाचन, मुखर वाचन कराएँ। वर्णों के अवयवों के अनुसार लेखन क्रम एवं पद्धति का अभ्यास कराएँ। निरुपयोगी वस्तुओं से स्वर एवं व्यंजन वर्णों के आकार बनवाएँ। ऊपर दिए गए व्यंजनों और विशेष वर्णों का मानक वाचन कराएँ। विद्यार्थियों से स्वर एवं व्यंजनों से पाँच संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों की सूची बनवाएँ।

● देखो, समझो और पढ़ो :

(ब) दिमाग चलाओ

१. मिचौली खेलना ।

२. और ग्यारह ।

३. अक्ल बड़ी या

४. क्या जाने का स्वाद ।

५. के बहाना ।

६. होना ।

७. होना ।

८. में राम बगल में

९. तले 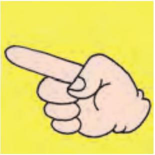 दबाना ।

१०. 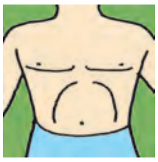 में दौड़ना ।

११. अपने पर मारना ।

१२. 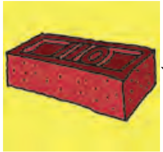 का जबाब से देना ।

१३. 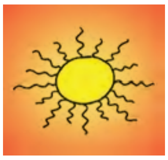 को दिखाना ।

१४. की = ।

❑ ऊपर दिए गए चित्रों और शब्दों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण कराएँ । विद्‌यार्थियों को चित्रों के आधार पर कहावतें/मुहावरे पहचानकर लिखने के लिए कहें और उनके अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करने हेतु प्रेरित करें । अन्य मुहावरों एवं कहावतों के चित्र बनवाएँ ।

● पढ़ो, समझो और प्रयोग करो :

१०. (अ) नाम हमारे

१. रेखा द्‌वारा चित्रों और संज्ञाओं की जोड़ियाँ मिलाओ :

२. निम्न वाक्यों में आए संज्ञा शब्दों के चारों ओर पेन्सिल से गोल बनाओ :

(१) मैं विद्‌यार्थी हूँ ।
(२) यह वृक्ष है ।
(३) हिमालय बर्फीला है ।
(४) स्पृहा होशियार है ।
(५) भारत मेरा देश है ।
(६) केरल में सब साक्षर हैं ।
(७) गुलदस्ता सुंदर है ।
(८) श्रोता बैठे हैं ।
(९) शक्कर लेकर आओ ।
(१०) दो लीटर तेल दीजिए ।

❑ विद्‌यार्थियों से पाठ में आए चित्रों और शब्दों का सूक्ष्म निरीक्षण करवाकर मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । प्रयोग के माध्यम से संज्ञा के अध्ययन-अनुभव की प्रक्रिया पूर्ण करें । अन्य संज्ञा शब्दों का अभ्यास कराएँ । ध्यान रहे कि संज्ञा की परिभाषा नहीं बतानी है ।

(ब) संबोधन तुम्हारे

१. रेखा द्‌वारा चित्रों और सर्वनामों की जोड़ियाँ मिलाओ :

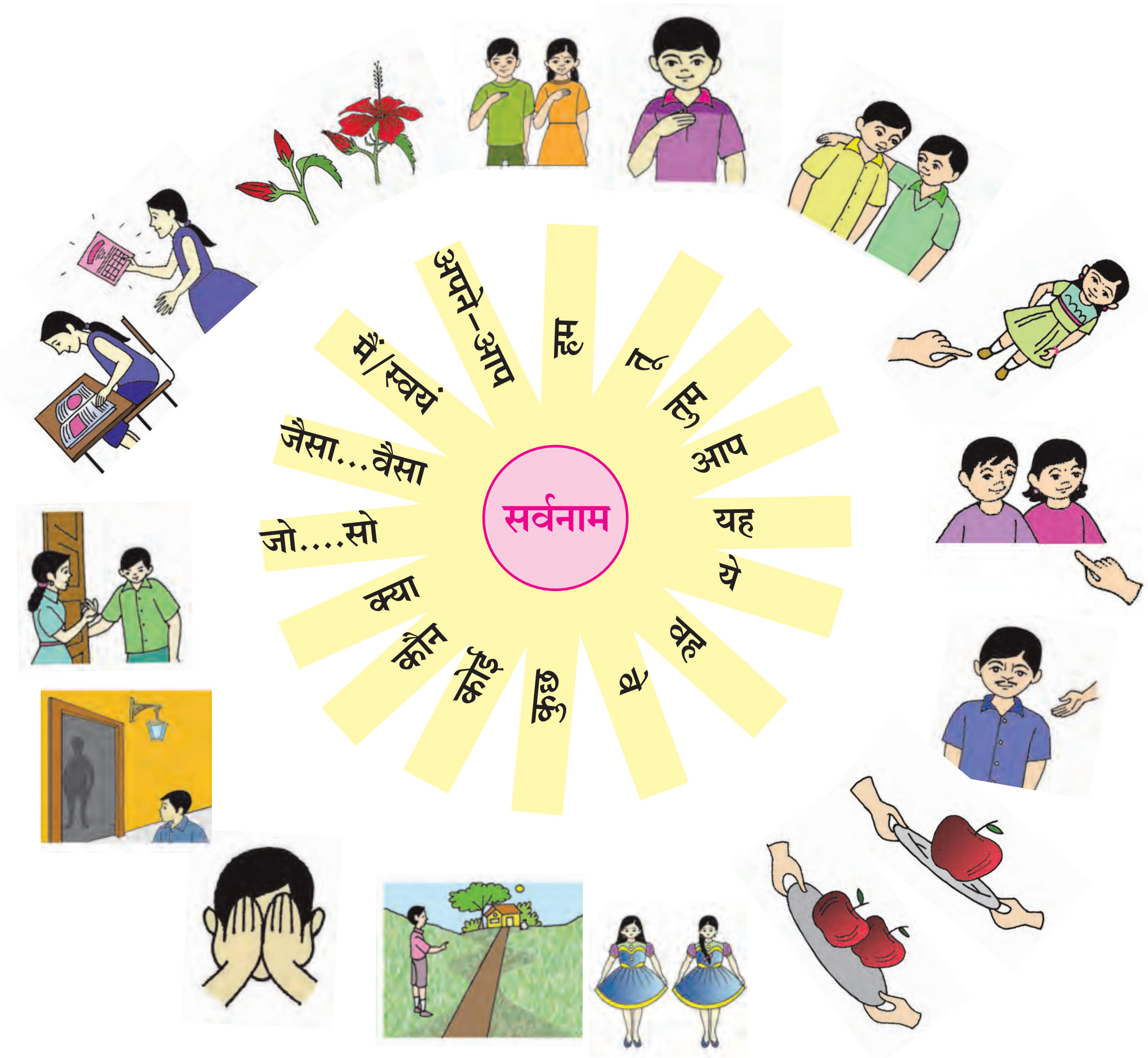

२. नीचे दिए गए वाक्यों में उचित सर्वनाम शब्द लिखकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :

(१) चंद्रनील ने कांचन से कहा, ''........ अभी क्रिकेट खेलने जा रहा हूँ ।'' (हम, मैं)
(२) माँ ने बेटे से पूछा, ''........ कब तक घर वापस आओगे ?'' (तू, तुम, आप)
(३) बेटे ने माँ से कहा, ''........ चिंता मत कीजिए । मैं ..... आ जाऊँगा ।'' (आप, तुम, तू , अपने-आप)
(४) दरवाजे पर घंटी की आवाज सुनकर लता ने कहा, ''........ तो आया है ।'' (कुछ, कोई, कौन)
(५) यह ....कलम है जिसे मैं भूल गया था । (ये, वह, वही, यही)
(६) इस खेल में ...., ... कर रहा है, पता नहीं चलता । (कब, कौन, क्या)
(७) मैंने आज एक कहावत पढ़ी- 'जो .... बोएगा वह .... काटेगा ।' (जैसा, वैसा, ऐसा)

❑ विद्‌यार्थियों से शब्दों और चित्रों का सूक्ष्म निरीक्षण कराएँ । शब्दों का मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । सार्वनामिक शब्दों के सामान्य प्रयोग का अभ्यास कराएँ । प्रयोगों के आधार पर शब्दों के स्थान, महत्व पर चर्चा करें । सर्वनाम की परिभाषा नहीं बतानी है ।

● पढ़ो, समझो और बताओ :

११. अनोखा यात्री

नौजवान गदहे ने सोचा
चढ़ ली सभी सवारी,
लेकिन नहीं अभी तक आई
'बाइ पोस्ट' की बारी ।

सोचा, अबकी शहर घूमने
'बाइ पोस्ट' ही जाऊँ,
सारे जंगल में मैं ही तब
बुद्धिमान कहलाऊँ ।

तुलवाकर अपने को ढेंचू
डाक टिकट तब लाए,
सीने पर चिपकाकर उनको
फूले नहीं समाए ।

लेकिन डाक बॉक्स था छोटा
औ' शरीर था भारी,
बुद्धि लगाई तब ढेंचू ने
नहीं मान ली हारी ।

❑ उचित आरोह-अवरोह, हाव-भाव के साथ कथागीत का सस्वर पाठ करें । विद्यार्थियों से साभिनय, हाव-भाव के साथ अनुपाठ एवं पाठ कराएँ । विद्यार्थियों को कविता में निहित कहानी अपने शब्दों में कहने हेतु प्रेरित करें । कविता में आए नए शब्द लिखवाएँ ।

हाथ डाल बक्से में सोचा
पोस्टमैन जब आए,
डाक बॉक्स को खाली करके
मुझको भी ले जाए ।

बंदर, 'पोस्टमैन' बन आया
देख के गदहा वह चिल्लाया,
समझ गदहे को चिट्‌ठी चोर,
बंदर ने मारा डंडा जोर ।

चोट खाकर चौंका गदहा
देखा नजर उठाकर,
पोस्टमैन था खड़ा सामने
रेंका तब गुस्सा कर ।

किसने तुमको काम दिया यह
देख नहीं क्या पाते,
टिकट लगे हैं सीने पर
औ' ठप्पा कहाँ लगाते ?

–आलोक मेहरोत्रा

❑ 'पत्र की यात्रा' पर चर्चा करें । कविता में आए संज्ञा, सर्वनाम एवं क्रियाएँ ढूँढ़ने के लिए कहें । विद्‌यार्थियों को चुटकुले, हास्यकविता कहने के लिए प्रेरित करें । तौलने, चौंकने, चिपकाने, नजर उठाने, गुस्सा करने और ठप्पा लगाने का अभिनय करवाएँ ।

स्वाध्याय

१. **सुना हुआ कोई अन्य कथागीत सुनाओ ।**

२. **निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द बताओ :**

नौजवान, बुद्‌धिमान, तुलवाना, गदहा, नजर, गुस्सा, शरीर, ठप्पा, पोस्टमैन, बॉक्स ।

३. **कविता में आए 'ब', 'ल', 'स', 'आ' वर्ण से आरंभ होने वाले शब्द पढ़ो ।**

४. **एक वाक्य में उत्तर लिखो :**

(क) गदहे की कौन-सी सवारी की बारी अभी तक नहीं आई थी ?

(ख) गदहे ने डाक टिकट कहाँ चिपकाया था ?

(ग) डाक बॉक्स कैसा था ?

(घ) पोस्टमैन कौन था ?

(ङ) पोस्टमैन ने गदहे को क्या समझा ?

५. **निम्नलिखित वाक्यों में आए अशुद्‌ध शब्दों के मानक/शुद्‌ध रूप लिखो :**

(च) विद्‌यार्थी विद्‌यालय में पढते हैं ।

(छ) वाक्यों में विरम चिहन लगाना चाहिये ।

(ज) छमा बड़ों का करतव्य है ।

(झ) पञ्च और पन्थ की पहचान जरुरि है ।

(ञ) शृङ्‌गार से सदचर बढकर है ।

६. **नीचे दिए गए तनाव दूर करने संबंधी चित्रों को समझो और चर्चा करो :**

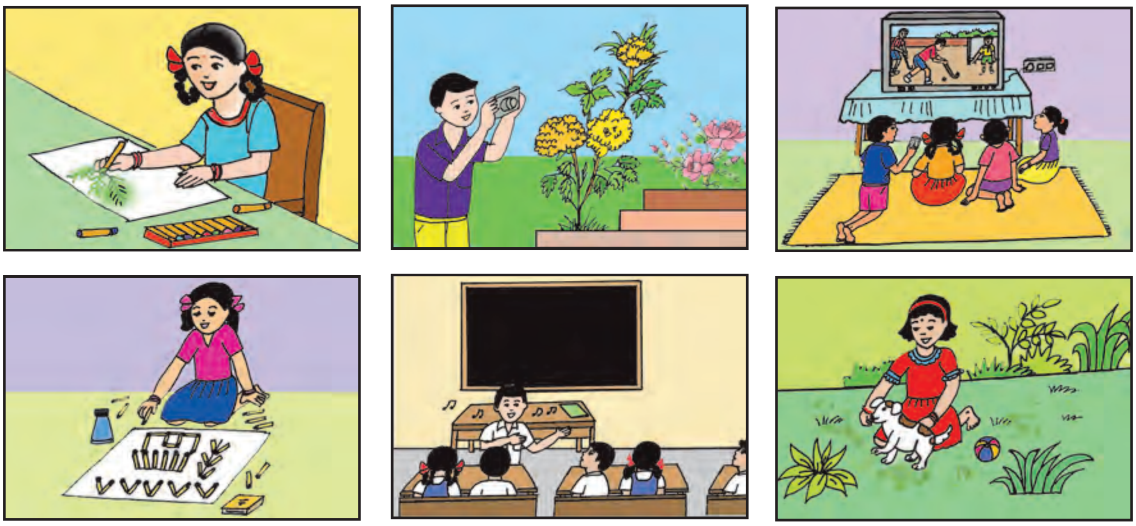

७. **श्यामपट्‌ट पर तुम्हें अपनी इच्छा से कुछ लिखना/चित्र बनाना है । तुम क्या करोगे, बताओ ।**

● **पढ़ो, समझो और बोलो :**

१२. पंच परमेश्वर

जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में गाढ़ी मित्रता थी । उनकी साझे में खेती होती थी ।

जुम्मन शेख की एक बूढ़ी खाला थी । उसके पास कुछ थोड़ी-सी मिलकियत थी । उसके निकट संबंधियों में कोई न था । जुम्मन ने लंबे-चौड़े वादे करके वह मिलकियत अपने नाम लिखवा ली थी । जब तक दानपत्र की रजिस्ट्री न हुई थी तब तक खालाजान का खूब आदर सत्कार किया गया पर रजिस्ट्री की मुहर ने इन सारी खातिरदारियों पर मानो पाबंदी लगा दी ।

अंत में एक दिन खाला ने जुम्मन से कहा, "बेटा, तुम्हारे साथ मेरा निर्वाह न होगा । तुम मुझे रुपये दे दिया करो, मैं अपना पका-खा लूँगी ।" जुम्मन ने धृष्टता के साथ उत्तर दिया, "रुपये क्या यहाँ फलते हैं ?" खाला बिगड़ गई । उन्होंने पंचायत करने की धमकी दी । जुम्मन बोले, "हाँ जरूर पंचायत करो ।"

संध्या समय एक पेड़ के नीचे पंचायत बैठी । पंच बैठ गए तो बूढ़ी खाला ने उनसे बिनती की, "पंचो, आज तीन साल हुए, मैंने अपनी सारी जायदाद अपने भानजे जुम्मन के नाम लिख दी । जुम्मन ने मुझे ताहयात रोटी-कपड़ा देना कबूल किया, अब रात-दिन का रोना सहा नहीं जाता । मुझे न पेट की रोटी मिलती है, न तन का कपड़ा ।"

रामधन मिश्र बोले, "जुम्मन मियाँ ! किसे पंच बदते हो ?" जुम्मन बोले, "पंचों का हुक्म अल्लाह का हुक्म है । खालाजान जिसे चाहें उसे बदें ।" खाला बोलीं, "और तुम्हारा किसी पर विश्वास न हो तो जाने दो, अलगू चौधरी को मानते हो ? लो, मैं उन्हीं को पंच बदती हूँ ।" अलगू कन्नी काटने लगे । बोले, "खाला तुम जानती हो कि मेरी जुम्मन से गाढ़ी दोस्ती है ।"

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ पाठ का वाचन करें । विद्यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । कहानी पर उनसे चर्चा करें । विद्यार्थियों को उनके शब्दों में कहानी कहने के लिए प्रेरित करें । विद्यार्थियों से पूछें कि वे अपने किन-किन कामों में स्वयं निर्णय लेते हैं । साहु, अंक, पंच, अंबर, पक्षी, पत्र, कर शब्दों के अन्य भिन्नार्थक शब्द लिखवाएँ । यथा- कुल = वंश एवं सब मिलाकर ।

खाला ने गंभीर स्वर से कहा, “बेटा, दोस्ती के लिए कोई अपना ईमान नहीं बेचता । पंच के दिल में खुदा बसता है । पंचों के मुँह से जो बात निकलती है, वह खुदा की तरफ से निकलती है ।”

अलगू चौधरी पंच हुए । जुम्मन को पूरा विश्वास था कि अब बाजी मेरी है । अलगू चौधरी को हमेशा कचहरी से काम पड़ता था । अतएव वह पूरा कानूनी आदमी था । उसने जुम्मन से जिरह शुरू की । एक-एक प्रश्न जुम्मन के हृदय पर हथौड़े की चोट की तरह पड़ता था । अंत में अलगू ने फैसला सुनाया, “जुम्मन शेख ! पंचों ने इस मामले पर विचार किया । उन्हें यह नीतिसंगत मालूम होता है कि खालाजान को माहवार खर्च दिया जाए ।” यह फैसला सुनते ही जुम्मन सन्नाटे में आ गए । रामधन मिश्र और अन्य पंच कह उठे, “इसका नाम पंचायत है । दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया । दोस्ती, दोस्ती की जगह है, किंतु धर्म का पालन करना मुख्य है ।”

इस फैसले ने अलगू और जुम्मन की दोस्ती की जड़ हिला दी । वे मिलते-जुलते थे मगर उसी तरह जैसे तलवार से ढाल मिलती है ।

अच्छे कामों की सिद्धि में बड़ी देर लगती है पर बुरे कामों की सिद्धि में यह बात नहीं होती । जुम्मन को भी बदला लेने का अवसर जल्द ही मिल गया । पिछले साल अलगू चौधरी बटेसर से बैलों की एक बहुत अच्छी गोई मोल लाए थे । पंचायत के एक महीने बाद इस जोड़ी का एक बैल मर गया । अब अकेला बैल किस काम का ? उसका जोड़ बहुत ढूँढ़ा गया पर न मिला । निदान यह सलाह ठहरी कि इसे बेच डालना चाहिए । गाँव में एक समझू साहु थे, वह इक्कागाड़ी हाँकते थे । इस बैल पर उनका मन लहराया, उन्होंने बैल खरीद लिया । एक महीने में दाम चुकाने का वादा ठहरा । चौधरी को भी जरूरत थी ही, घाटे की परवाह न की । समझू साहु ने नया बैल पाया तो लगे उसे रगेदने । वह दिन में तीन-तीन, चार-चार खेपें करने लगे । न चारे की फिक्र थी, न पानी की, बस खेपों से काम था ।

एक दिन चौथी खेप में साहु जी ने दूना बोझा लादा । दिन भर का थका जानवर, पैर उठते न थे ।

❑ विद्यार्थियों को उनके सरपंच, नगरसेवक/पार्षद के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रेरित करें । ग्राम पंचायत की कार्यपद्धति पर चर्चा करें । किसी समस्या पर ‘वर्ग पंचायत’ का प्रात्यक्षिक कराएँ । ग्राम पंचायत की महिला सदस्यों के नाम लिखवाएँ ।

वह धरती पर गिर पड़ा और ऐसा गिरा कि फिर न उठा । देहात का रास्ता बच्चों की आँख की तरह साँझ होते ही बंद हो जाता है । कोई नजर न आया । लाचार बेचारे साहु जी आधी रात तक नींद को बहलाते रहे । पौ फटते ही जो नींद टूटी और कमर पर हाथ रखा तो थैली गायब जिसमें दो-ढाई सौ रुपये बँधे थे । घबराकर इधर-उधर देखा तो कई कनस्तर तेल भी नदारद ।

इस घटना को कई महीने बीत गए । अलगू जब अपने बैल के दाम माँगते तब साहु और सहुआइन दोनों ही झल्लाए हुए कुत्ते की तरह चढ़ बैठते । अलगू चौधरी एक बार गरम पड़े । गाँव के भलेमानस परामर्श देने लगे कि पंचायत कर लो ।

इसके बाद तीसरे दिन उसी वृक्ष के नीचे पंचायत बैठी । रामधन मिश्र ने कहा, "बोलो चौधरी, किस-किसको पंच बदते हो ?" अलगू ने दीन भाव से कहा, "समझू साहु ही चुन लें ।" समझू खड़े हुए और कड़ककर बोले, "मेरी ओर से जुम्मन शेख ।" जुम्मन का नाम सुनते ही अलगू चौधरी का कलेजा धकधक करने लगा, मानो किसी ने अचानक थप्पड़ मार दिया हो ।

अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान बहुधा हमारे संकुचित व्यवहारों का सुधारक, पथ प्रदर्शक बन जाता है । जुम्मन शेख के मन में भी सरपंच का उच्च स्थान ग्रहण करते ही अपनी जिम्मेदारी का भाव पैदा हुआ । उसने सोचा; मैं इस वक्त न्याय और धर्म के सर्वोच्च आसन पर बैठा हूँ । मेरे मुँह से इस समय जो कुछ निकलेगा, वह देववाणी के सदृश है । पंचों ने दोनों पक्षों से सवाल-जवाब करने शुरू किए । बहुत देर तक दोनों दल अपने-अपने पक्ष का समर्थन करते रहे । अंत में जुम्मन ने फैसला सुनाया, "अलगू चौधरी और समझू साहु ! पंचों ने तुम्हारे मामले पर अच्छी तरह विचार किया । यही उचित है कि समझू बैल का पूरा दाम दें । जिस वक्त उन्होंने बैल लिया, उसे कोई बीमारी न थी । अगर उसी समय दाम दे दिए जाते तो आज समझू उसे फेर लेने का आग्रह न करते ।"

अलगू चौधरी फूले न समाए । उठ खड़े हुए और जोर से बोले, "पंच परमेश्वर की जय !" इसके साथ ही चारों ओर से प्रतिध्वनि हुई, "पंच परमेश्वर की जय !" थोड़ी देर बाद जुम्मन अलगू के पास आए और उनके गले लिपटकर बोले, "भैया ! आज मुझे ज्ञान हुआ कि पंच के पद पर बैठकर न कोई किसी का दोस्त होता है, न दुश्मन । न्याय के सिवा उसे कुछ और नहीं सूझता ।" अलगू भी रोने लगे । इस पानी से दोनों के दिलों का मैल धुल गया । मित्रता की मुरझाई हुई लता फिर हरी हो गई ।

– मुंशी प्रेमचंद

❑ पाठ में आए पंचमाक्षर से बने अनुस्वारयुक्त शब्दों को खोजने के लिए कहें । उन शब्दों में किस वर्ग के कौन-से पंचमाक्षर आए हैं, पूछें । विद्यार्थियों से पंचमाक्षरयुक्त अन्य शब्द कहलवाएँ/लिखवाएँ । यहाँ विद्यार्थियों को पंचमाक्षर के नियम नहीं बताने हैं ।

स्वाध्याय

१. अपनी पसंद की सुनी हुई कोई एक कहानी सुनाओ ।

२. वृक्षारोपण समारोह के बारे में दिए गए मुद्दों के आधार पर आठ से दस वाक्य बताओ :

कब... दिनांक ... समय ... की गई तैयारी ... कौन-कौन आए ... कैसे मनाया गया ... तुम्हें कैसा लगा ।

३. उभयचर प्राणियों से संबंधित जानकारी पढ़ो ।

४. उत्तर लिखो :

(क) किनके बीच गाढ़ी मित्रता थी ?

(ख) खालाजान ने किसे पंच बदा ?

(ग) जुम्मन क्यों सन्नाटे में आ गए ?

(घ) जुम्मन शेख के मन में जिम्मेदारी का भाव कब पैदा हुआ ?

(ङ) अलगू के गले लिपटकर जुम्मन क्या बोले ?

५. निम्नलिखित वाक्यों में संज्ञा और सर्वनाम शब्द ढूँढ़कर बताओ :

माधोपुर गाँव के मेले में शहर जैसी बड़ी भीड़ थी । वहाँ कुछ बच्चे भी घूम रहे थे । उन्होंने दुकानों में पानीपूरी, दही, चने, समोसे, दहीबड़े, लस्सी और कई प्रकार की मिठाइयाँ बिकते हुए देखीं । उन्होंने तय किया कि हम सब अपने-आप खरीददारी करेंगे । कुछ समय बाद जब वे आपस में मिले तो किसने क्या खरीदा है, पूछने लगे । अंत में सभी खुशी-खुशी अपने-अपने घर आ गए ।

६. नीचे दिए गए 'निर्णय क्षमता' संबंधी चित्रों को समझो और चर्चा करो :

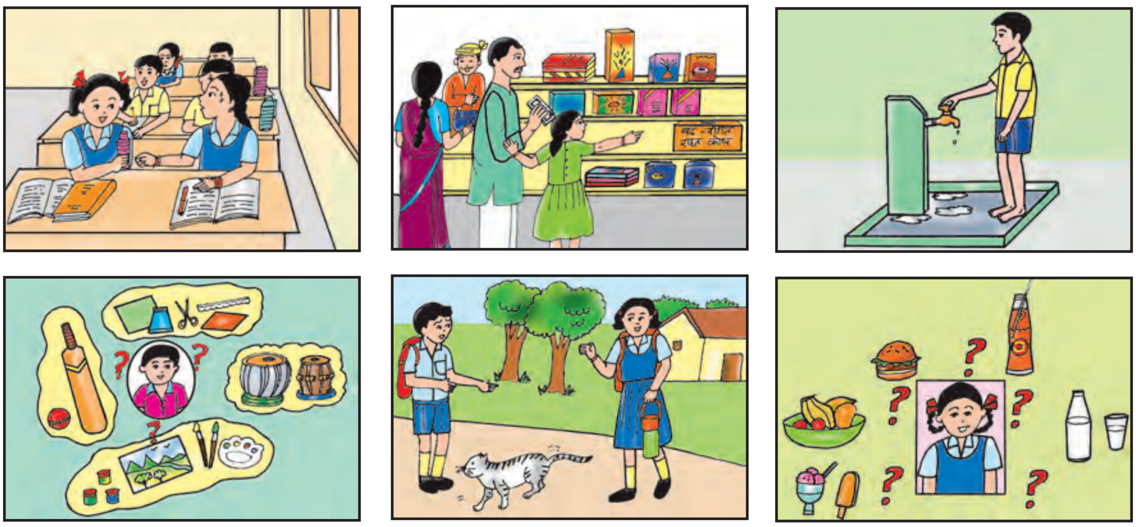

७. तुम्हारे जन्मदिन पर माँ ने तुम्हारे उस मित्र को आमंत्रित किया है, जिससे तुम्हारा मनमुटाव है । उसे सामने पाकर तुम्हारी क्या प्रतिक्रिया होगी, बताओ ।

● **पढ़ो और समझो :**

१३. बूझो तो जानें !

चाहे मुझे इंजिन में डालो,
चाहे सिगड़ी ही सुलगा लो,
जलकर बन जाऊँगा राख,
बस यही है मेरी साख ।

×××

लड़की के हाथों में सुहाती,
लड़के के हाथों में भाती,
सोने-चाँदी से बनती पर,
हीरे पन्ने में भी इठलाती ।

×××

बच्चो मेरी कलाएँ देखो,
घटती-बढ़ती अदाएँ देखो,
दिन में मैं नहीं दिखता,
रात-रात भर जगता रहता ।

लिए हुए मैं नीर हूँ,
कुदरत की मैं देन हूँ,
रोगी के मैं जाता पास,
पीते ही बुझती है प्यास ।

×××

धरती पर हूँ पड़ा हुआ,
पत्थर का हूँ बना हुआ,
पुदीना, धनिया, मिर्ची ले लो,
चटनी मसाले पीस डालो ।

×××

बाँध गले में डोर मैं अपने,
घूम-घूम कर आती हूँ,
आसमान में मँड़राती हूँ,
चिड़ियों संग लहराती हूँ ।

-भारती श्रीवास्तव

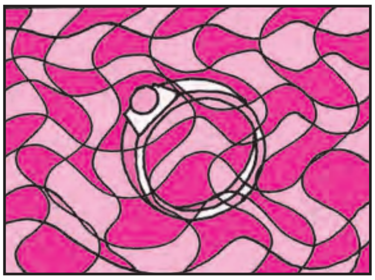
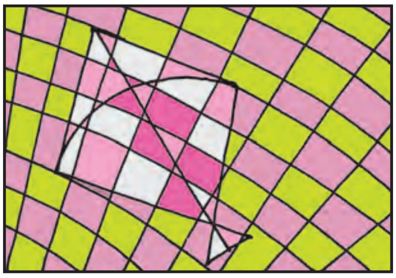
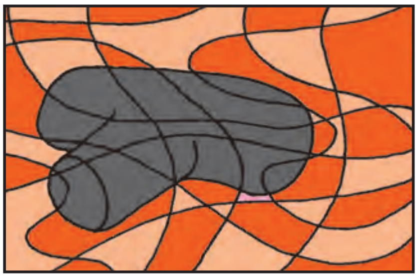
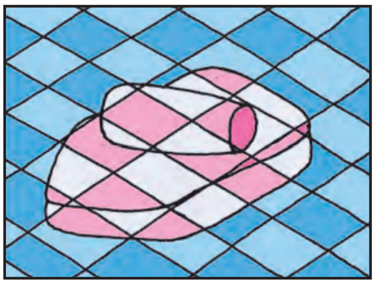
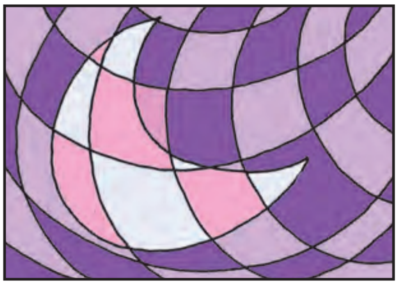
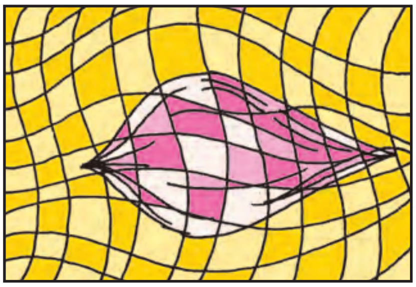

❑ उचित हाव-भाव, आरोह-अवरोह के साथ पहेलियों का सस्वर वाचन करें । मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । विद्यार्थियों से पहेलियाँ पूछें । अन्य पहेलियाँ बूझने के लिए भी प्रेरित करें । रिक्त स्थानों में उत्तर लिखने के लिए कहें । पहेलियों का संग्रह कराएँ ।

● पढ़ो और चर्चा करो :

१४. कला का सम्मान

प्रथम दृश्य

(कुंतल घर में खिलौने रँग रही है ।)

माँ : बेटी कुंतल, थोड़ी देर के लिए अपना काम रोककर दूध तो पी लो ।

कुंतल : अभी नहीं माँ, मुझे ये खिलौने रँग लेने दो ।

पिता जी : बेटा इतनी जल्दी क्या है, बाद में रँग लेना ।

कुंतल : नहीं बापू, आज ही ये सारे खिलौने विद्‌यालय ले जाना है । विद्‌यालय में कला प्रदर्शनी है ।

बुआ जी : तो क्या विद्‌यालय के सारे बच्चे खिलौने बनाकर लाएँगे ?

कुंतल : नहीं बुआ जी, कोई चित्र बनाकर लाएगा, कोई कपड़े से फूल-पत्तियाँ बनाकर लाएगा ।

माँ : हमारे घर में मिट्‌टी के बर्तनों का व्यवसाय होने से कुंतल ने खिलौने बनाना सीख लिया ।

कुंतल : लाओ माँ अब दूध दे दो । ये देखो मेरे सारे खिलौने तैयार हैं ।

पिता जी : बेटी बहुत सुंदर बने हैं खिलौने ।

बुआ जी : देखना अपनी कुंतल की बहुत प्रशंसा होगी ।

पिता जी : वैसे तुम्हारे बंडू चाचा का बड़ा बेटा पंचम भी बढ़िया कलाकार है ।

(पड़ोस के बच्चों का प्रवेश ।)

गंधार : कुंतल तैयार हो क्या स्कूल चलने के लिए ?

डिंपल : वह शायद भीतर के कमरे में तैयार हो रही है ।

पांडुरंग : चाचा जी नमस्ते ! अब कैसी तबीयत है आपकी ?

पिता जी : नमस्ते बेटा, दवाई ले रहा हूँ । पहले से काफी अच्छी तबीयत है ।

डिंपल : ये लो कुंतल आ गई । चलो चलें, देर न हो जाए ।

कुंतल : माँ-बापू आप लोग भी आना हमारे विद्‌यालय में ।

गंधार : हाँ, बहुत अच्छी कलाकारी देखने को मिलेगी ।

माँ : जरूर बेटा ! हम दस बजे तक विद्‌यालय पहुँच जाएँगे ।

❑ उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह के साथ पाठ का वाचन करें । विद्‌यार्थियों से मुखर एवं मौन वाचन कराएँ ।

दूसरा दृश्य

(स्कूल के प्रांगण में मेजों पर चित्र, खिलौने आदि सजाकर रखे हैं ।)

टीचर जी : जिन विद्‌यार्थियों की जो भी कलाकारी है वे उन वस्तुओं वाली मेज के पीछे खड़े हो जाएँ ।

पंचम : पांडुरंग मेरे चित्र और तुम्हारे कपड़े के फूल एक ही मेज पर रखे हैं ।

डिंपल : टीचर जी क्या मैं अपनी सहेली कुंतल के साथ खड़ी हो जाऊँ ?

टीचर जी : हाँ, हाँ खड़ी हो जाओ । देखो बच्चो ! भीड़ बढ़ रही है । अपनी जगह मत छोड़ना ।

तीसरा दृश्य

(कुंतल के घर में चर्चा चल रही है ।)

माँ : बेटा कुंतल, सारे बच्चों ने सुंदर काम किया था बहुत अच्छी लगी प्रदर्शनी ।

पिता जी : पुरस्कार किसी को भी मिले पर सारे कलाकारों का सम्मान होना चाहिए ।

माँ : आज आपने बहुत अच्छी बात की है । चलिए हम कंगना टीचर को ये बात बताएँ ।

(अचानक कंगना टीचर का प्रवेश ।)

माँ : अरे टीचर जी तो यहीं आ गईं । नमस्ते ! टीचर जी ।

टीचर जी : मुझसे रहा नहीं गया । मैं आपको यह बताने आई हूँ कि कुंतल के खिलौने सबने बहुत पंसद किए हैं । उसे प्रथम पुरस्कार के लिए चुना गया है ।

पिता जी : हमारी बेटी को पुरस्कार मिला है ये खुशी की बात है पर हम चाहते हैं कि सारे कलाकार बच्चों का सम्मान हो ।

टीचर जी : वाह ! ये तो बहुत अच्छी बात है । मैं प्रधानाचार्य जी से बात करूँगी ।

(अगले दिन पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में सारे कलाकार बच्चों का सम्मान किया गया ।)

❑ विद्‌यार्थियों के गुट बनाकर एकांकी का नाट्‌यीकरण कराएँ । अब तक पढ़े संवाद/नाटकों के बारे में विद्‌यार्थियों से पूछें ।‘कलाकार बच्चों का सम्मान’ विषय पर चर्चा कराएँ । विद्‌यार्थियों से पाठ में आए संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया की सूची बनवाएँ ।

स्वाध्याय

१. **परिवार के किसी बुजुर्ग का उनसे सुना हुआ एक अनुभव सुनाओ ।**

२. **निम्नलिखित वाक्यों में लिंग बदलकर वाक्य पुनः बोलो :**

(क) बैल खूँटे से बँधा है ।

(ख) मुक्केबाज अपना खेल प्रदर्शित कर रही है ।

(ग) हाथी जंगल में रहता है ।

(घ) सब्जीवाली ठेले पर सब्जी बेच रही है ।

(ङ) बिलाव दूध पी रहा है ।

३. **'लड़का-लड़की एक समान' विषय पर समूह में चर्चा करते हुए अपने विचार व्यक्त करो ।**

४. **किसने किससे कहा, लिखो :**

(च) "अभी नहीं माँ, मुझे ये खिलौने रँग लेने दो ।"

(छ) "विद्‍यालय में कला प्रदर्शनी है ।"

(ज) "देखना अपनी कुंतल की बहुत प्रशंसा होगी ।"

(झ) "वह शायद भीतर के कमरे में तैयार हो रही है ।"

(ञ) "टीचर जी क्या मैं अपनी सहेली कुंतल के साथ खड़ी हो जाऊँ ?"

५. **अपनी कक्षा में स्वच्छता हेतु श्रमदान करना है अतः अनुमति प्राप्त करने के लिए प्रधानाध्यापक को पत्र लिखो ।**

६. **नीचे दिए गए 'समानुभूति' संबंधी चित्रों को समझो और चर्चा करो :**

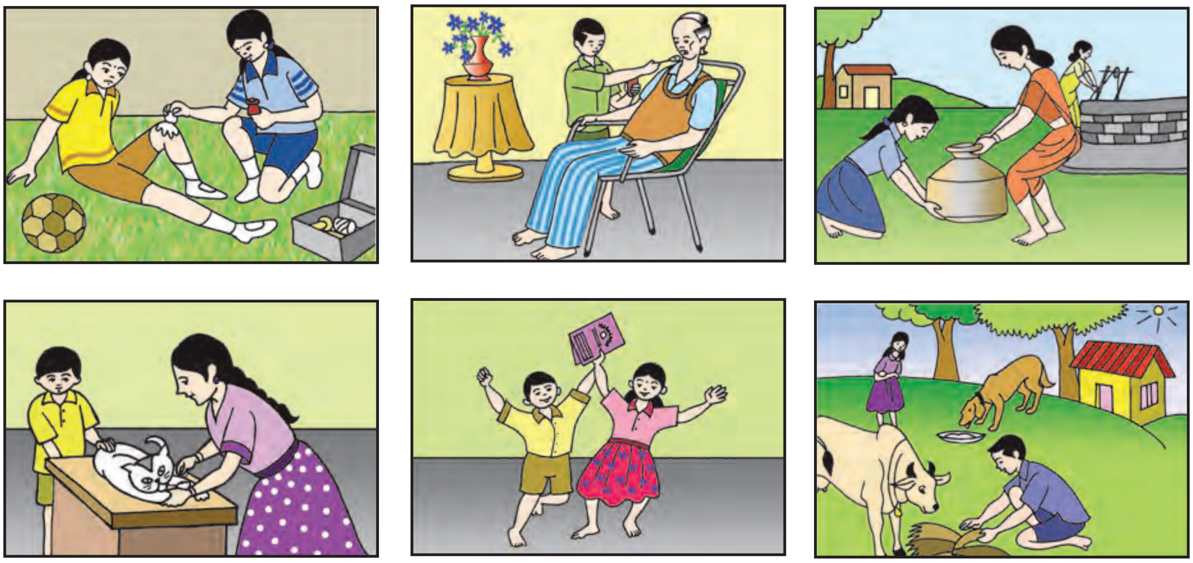

७. **तुम घर में अकेले हो । बाहर से दरवाजा बंद हो गया है । तुम क्या करोगे, बताओ ।**

● पढ़ो, समझो और लिखो :

१५. कूड़ा-करकट से बिजली

विश्व में ऊर्जा का अकाल चल रहा है । हमारे यहाँ इसका संकट और भी अधिक है । इसका कारण यह है कि अपने देश में न केवल तेल से प्राप्त ऊर्जा का अभाव है अपितु विद्‌युत शक्ति की कमी भी है । हमारी जरूरतों के लिए जितनी बिजली चाहिए उतनी यहाँ पैदा नहीं हो पाती । यद्‌यपि देश में अनेक बिजलीघर हैं पर बिजली उत्पादन की कमी है । बिजली संकट का एक कारण तो यह है पर अभाव के अन्य कई कारण भी रहे हैं, जैसे- बायलरों, टरबाइनों आदि का लापरवाही या किसी त्रुटि के कारण गड़बड़ा जाना, हड़तालों के कारण उत्पादन कार्य ठप होना आदि । एक प्रमुख कारण यह है कि हमारे यहाँ जितनी बिजली पैदा होती है उसके अनुपात से कहीं अधिक ट्रान्समिशन की गड़बड़ी में नष्ट हो जाती है ।

बिजली तैयार करने के प्रमुख स्रोत हैं-ताप,पानी और अणु । तीनों ही स्रोतों से हमारे यहाँ बिजली तैयार की जाती है । हमारी जरूरत को तारापुर के परमाणु ऊर्जा केंद्र, भाखड़ा नंगल जैसे बड़े जल विद्‌युत केंद्र और बोकारो थर्मल पावर स्टेशन जैसे ताप बिजली-घर कई-कई संख्या में होने के बावजूद पूरा नहीं कर पाते । अतः बिजली किस तरह ज्यादा-से-ज्यादा पैदा की जाए, इसपर गहराई से विचार करना स्वाभाविक हो गया है ।

कूड़ा-करकट से बिजली : कम लागत, अधिक लाभ- ताप एवं पनबिजली की दारुण स्थिति से उबरने का एक सुविधाजनक तथा कम खर्चीला उपाय यह है कि कूड़ा-करकट से बिजली तैयार की जाए । यह है भी कितनी अच्छी बात कि कूड़ा-करकट की गंदगी से बचाव का बचाव और फायदे का फायदा, यानी बिजली प्राप्ति । महानगरों में कूड़ा-करकट का कितना बड़ा भंडार होता है, इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि अकेले मुंबई में प्रतिदिन कई हजार टन कूड़े-कचरे का ढेर लग जाता है । इस ढेर को नष्ट

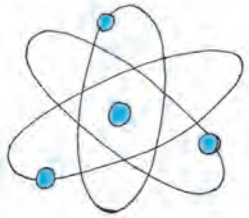

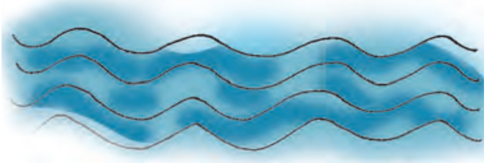

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ पाठ के एक परिच्छेद का मुखर वाचन कराएँ । 'बिजली' की बचत किस प्रकार की जा सकती है, पूछें । 'हमें किन-किन चीजों की बचत करनी चाहिए और क्यों' चर्चा कराएँ । बिजली से चलने वाले यंत्रों के नाम पूछें ।

न करके, जलाकर ताप बिजली तैयार की जाए तो इससे दो लाख किलोवाट से अधिक बिजली तैयार हो सकती है । है न हैरत की बात ! अब इससे सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि प्रतिदिन न जाने कितने लाख किलोवाट बिजली पैदा करने के साधन को बेकार में फेंककर बरबाद कर दिया जाता है ।

बिजली पैदा करने के लिए भी आखिर कूड़ा-करकट को जलाना ही होगा पर एक खास तरीके से । बिजली पैदा करने के उद्देश्य से कूड़े-कचरे को जलाने वाली एक विशिष्ट भट्ठी चाहिए । इस भट्ठी में कूड़ा अच्छी तरह जल सके, इसके लिए यह जरूरी है कि ऑक्सीजनयुक्त हवा उसे अच्छी तरह मिलती रहे । अच्छी तरह जलने पर तापमान एक हजार से बारह सौ सेंटीग्रेड तक हो जाएगा फिर वाष्प टरबाइन अपनी ड्यूटी बजाते हुए बिजली पैदा करने वाले जनरेटर को चलाएँगे । लीजिए साहब, हो गई बिजली तैयार !

यदि ऐसे प्रयोग की शुरुआत हो जाए तो विद्युत उत्पादन के इतिहास में एक सुखद क्रांति आ जाए । शहरों में इस तरीके से बिजली का उत्पादन चल पड़े तो हमारे उपेक्षित ग्रामों की हालत भी सुधर जाए । अभी हमारे देश में जितनी बिजली पैदा होती है उसका अधिक प्रतिशत शहरों में ही खपता है, ग्रामों को केवल कुछ प्रतिशत ही बिजली मिल पाती है । ग्रामीण क्षेत्रों के अविकसित होने का एक प्रमुख कारण बिजली की किल्लत ही है ।

कूड़ा-करकट से बिजली पैदा करना काफी सस्ता हो सकता है । इसके लिए जो संयंत्र लगाए जाएँगे, उसमें काम आने वाले सारे उपकरण स्वदेशी होंगे यानी विदेशी उपकरणों की निर्भरता नहीं रह जाएगी ।

पहले के जमाने में लोग कूड़े को फेंक देते थे पर अब वह दिन दूर नहीं जब लोग-बाग इसे फेंकने की बजाय सँजोकर रखना पसंद करेंगे । आने वाले समय में कचरा और कबाड़, बेकार और मामूली नहीं बल्कि काफी कीमती साबित होने वाले हैं । साथ ही साथ हमारा घर-आँगन, परिसर स्वच्छ भी हो जाएगा अर्थात आम के आम, गुठलियों के दाम ।

– जहीर नियाजी

❑ पाठ के किसी एक परिच्छेद का श्रुतलेखन कराएँ । पाठ में आए पंचमाक्षरयुक्त शब्दों को ढूँढ़ने के लिए कहें । बिजली, पानी की बचत के बारे में सुवचन/घोषवाक्य बनाने के लिए प्रेरित करें । उपरोक्त संदर्भ में विज्ञापनों का संग्रह कराएँ । सुवचन, घोषवाक्य, दोहों का संग्रह कराके इनके पाठ की प्रतियोगिता कराएँ । 'स्वच्छता' हेतु लगने वाली वस्तुओं की सूची बनवाएँ । साक्षात्कार पर वर्ग में चर्चा करें । बचत के बारे में विद्यार्थियों को उनके रिश्तेदार, पड़ोसी और परिचित मित्र का साक्षात्कार लेने के लिए प्रेरित करें ।

स्वाध्याय

१. **जलचक्र की वैज्ञानिकता सुनो ।**

२. **अपनी पसंद की चित्रमालिका पर गुटानुसार प्रश्न एवं उनके उत्तर तैयार करके बताओ ।**

३. **'विश्व पुस्तक दिवस' के बारे में पढ़ो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) हमारे यहाँ ऊर्जा संकट के कौन-कौन-से कारण हैं ?

(ख) हमारी जरूरत की बिजली किन-किन केंद्रों से आती है ?

(ग) बिजली पैदा करने के साधन को किस तरह बरबाद कर दिया जाता है ?

(घ) ग्रामीण क्षेत्रों के अविकसित होने का क्या कारण है ?

(ङ) भविष्य में लोग-बाग कूड़े को क्यों सँजोकर रखना पसंद करेंगे ?

५. **लिंग परिवर्तित करके वाक्य पुनः बोलो :**

(च) लड़के खो-खो खेल रहे हैं ।

(छ) पेड़ से पत्ते झड़ रहे हैं ।

(ज) हिरनी कुलाँचें भर रही है ।

(झ) प्रतियोगिता की विजेता सम्मानित की गई ।

(ञ) मादा गेंडा घास चर रही है ।

4VVV8F

६. **'समस्या का समाधान' संबंधी नीचे दिए गए चित्रों को समझो और चर्चा करो :**

७. **तुम्हारे पड़ोस में रहने आए लड़के/लड़की को हिंदी नहीं आती । तुम क्या करोगे, बताओ ।**

● पढ़ो, समझो और कृति करो :

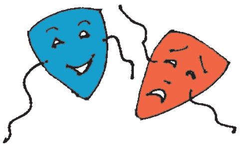

१६. नाट्यकला

नाट्यकला मनुष्य की अभिव्यक्ति का एक प्रभावी माध्यम है । किसी वास्तविक अथवा काल्पनिक वस्तु, स्थिति का आभास निर्माण करके उसे दिखाना, प्रस्तुत करना नाट्य है । देखे, सुने हुए प्रसंगों का अनुकरण करके पुनः प्रस्तुत करना एक कला है । इस प्रस्तुति में चेहरे के हाव-भाव, भाषा, आवाज में उतार-चढ़ाव महत्त्वपूर्ण हैं । शारीरिक क्रियाएँ, चेहरे के हाव-भाव और साथ में संबंधित शब्दों द्‌वारा अभिनय किया जाता है । इसी को नाट्यकला कहते हैं । अभिनय के कई प्रकार हैं । शारीरिक क्रियाओं द्‌वारा व्यक्त किए जाने वाले अभिनय को 'कायिक अभिनय' कहते हैं । शब्दों की सहायता से प्रस्तुत किया जाने वाला अभिनय 'वाचिक अभिनय' तथा चेहरे के भावों द्‌वारा किया गया अभिनय 'मुद्रा अभिनय' कहलाता है । चेहरे की रंगभूषा, पोशाक, गहने, मुखौटे आदि बाह्य साधनों के साथ किया गया अभिनय 'आहार्य' होता है । प्रतिदिन हम अपने जीवन में अभिनय का उपयोग करते रहते हैं । दादी से सुनी कहानियाँ, माँ की लोरी, मित्र से मेले का वर्णन, काम न करने के बहाने, हाव-भाव के साथ कविता पाठ आदि सभी जगह यह कला किसी-न-किसी रूप में उपस्थित है । अभिनय करते या कोई भूमिका निभाते समय बाहरी साधनों के उपयोग से वह अधिक प्रभावशाली हो जाती है । भूमिका के अनुसार चेहरे को सजाने, उचित कपड़े पहनने को रंगभूषा या 'वेशभूषा करना' कहते हैं । यदि परी की भूमिका करनी हो तो सफेद-चमकदार कपड़े, मुकुट, पंख, छड़ी आदि की आवश्यकता पड़ सकती है । यदि राक्षस की भूमिका करनी हो तो चेहरे पर पेन्सिल से, कोयले से या रंग की

❑ पाठ का मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । परिसर के कृषक एवं व्यवसायियों की कृतियों, बोल-चाल पर प्रश्नोत्तर द्‌वारा चर्चा करें । इन व्यवसायियों के कार्यों की नकल विद्‌यार्थियों से कराएँ । उन्हें नाटक देखने के लिए प्रेरित करें और देखे नाटकों के बारे में पूछें ।

सहायता से भौंहें मोटी करना, दो बड़े दाँत सफेद रंग से, खड़िया से या आटे से रँगने आदि से वह प्रभावशाली होती है । रँगने के स्थान पर आवश्यकतानुसार मुखौटों का भी प्रयोग किया जा सकता है । वेशभूषा देश-काल, व्यक्ति के अनुसार ही होनी चाहिए । हमेशा बाह्‌य साधनों का उपयोग किया ही जाए, ऐसा आवश्यक नहीं है । हाँ, ऐतिहासिक या पौराणिक पात्रों के लिए इनका उपयोग प्रभावी होता है ।

जैसे-हिंदी सीखने के लिए क, ख सीखना पड़ता है । इन वर्णों से बने चित्रों, शब्दों को देखना, पढ़ना, लिखना पड़ता है । ठीक उसी तरह अभिनय सीखने के लिए पशु-पक्षी, यातायात के साधनों की बोलियों, ध्वनियों, कृतियों की नकल करके शुभारंभ किया जा सकता है । आस-पास के व्यवसायियों के बोलने के ढंग, उनकी कृतियों की नकल द्‌वारा इसे दृढ़ किया जा सकता है । अभिनय सीखने के लिए आवश्यक नहीं कि किसी संस्था में प्रवेश लिया जाए । स्वयं अभ्यास से भी इसे काफी हद तक समझा जा सकता है । आज रंगमंच, दूरदर्शन या चित्रपट में चमकते हुए बड़े-बड़े सितारे/अभिनेता-अभिनेत्रियों में से कई ने किसी अभिनय अकादमी में शिक्षा-ग्रहण नहीं की थी । हाँ, यह अवश्य है कि ऐसी संस्थाएँ किसी की कला को अधिक चमका सकती हैं । एक सच्चे एवं सफल अभिनेता या अभिनेत्री के लिए उसकी अपनी लगन, परिश्रम, धैर्य, कार्य के प्रति समर्पण का होना अधिक आवश्यक होता है ।

सपने देखना अच्छी बात है पर इन सपनों को पूरा करने के पीछे लगने वाले परिश्रम को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए । परिश्रम ही सफलता की असली कुंजी है ।

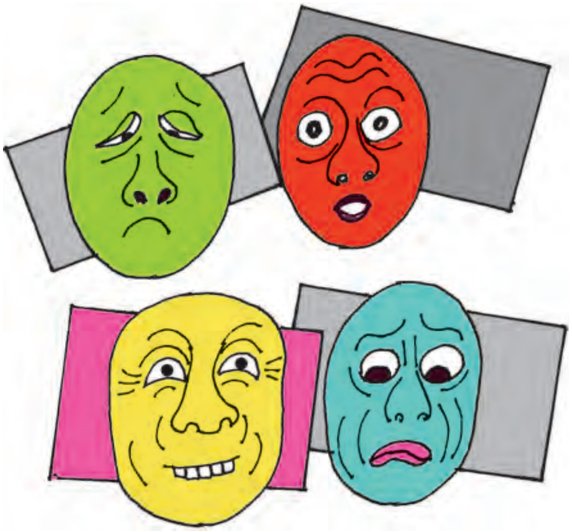

- परिसर के व्यवसायियों की सूची बनवाएँ । उनसे 'प्रिय व्यवसाय' और उनकी अपनी पसंद के कारण पर पाँच वाक्य बुलवाएँ । विद्‌यार्थियों को उनकी पसंद के किसी धारावाहिक के कलाकारों के नाम बताने के लिए कहें । वे बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं, पूछें ।

स्वाध्याय

१. **किसी कलाकार के बारे में सुनो ।**

२. **अपनी पसंद की चित्रकथा का निरीक्षण करो । उसकी पाँच विशेष बातें बताओ ।**

३. **अपनी प्रिय कला के बारे में पढ़ो और उससे संबंधित चित्र अपनी कृति पुस्तिका में चिपकाओ ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम क्या है ?

(ख) नाट्‌यकला किसे कहते हैं ?

(ग) नाट्‌यकला कहाँ-कहाँ उपस्थित है ?

(घ) अभिनय का शुभारंभ करने के लिए क्या करना चाहिए ?

(ङ) सच्चे अभिनेता या अभिनेत्री में कौन-से गुण होने चाहिए ?

५. **नीचे दिए गए शब्दसमूहों के लिए एक-एक सार्थक शब्द लिखो :**

(च) देश से प्रेम करने वाला ।

(छ) कृषि कार्य करने वाला ।

(ज) संचालन करने वाला ।

(झ) जो माता के प्रति भक्ति रखता है ।

(ञ) 'अ' से 'श्र' तक के वर्ण ।

AH5RA3

६. **नीचे दिए गए 'स्व की पहचान' संबंधी चित्रों को समझो और चर्चा करो :**

७. **राह चलते एक व्यक्ति बेहोश होकर गिर पड़ा है । ऐसी स्थिति में उसकी सहायता के लिए तुम क्या-क्या करोगे, बताओ ।**

पुनरावर्तन–१

१. रेडियो/सीडी पर वाद्‍यसंगीत सुनो ।

२. अपने राज्य के किसी महत्वपूर्ण बाँध की जानकारी बताओ ।

३. कोई बाल एकांकी पढ़ो ।

४. अपने अबतक के बचपन की किसी मजेदार घटना का वर्णन लिखो ।

५. नीचे दी गई चौखट में संज्ञा तथा विशेषण शब्द ढूँढ़कर चौखट बनाओ । संज्ञा और विशेषण अपनी कॉपी में लिखो :

भी	ड़	ब	हा	दु	र	आ	य
सु	पं	द्र	ह	लो	ग	म	ह
चि	द	सि	पा	ही	व्य	न	या
प	त्र	र	द	मि	जा	क्ति	रा
को	कु	थो	ड़ा	ही	ठा	दा	धा
क	ई	छ	प	ड़ा	बी	स	ली
गे	हूँ	ते	व	य	ती	न	ट
भा	र	व	ल	ही	मी	ट	र

उपक्रम/प्रकल्प

प्रति सप्ताह अपने बड़ों से दोहे सुनो ।

तुमने पशु–पक्षियों के लिए वर्ष भर क्या–क्या किया, बताओ ।

अपने प्रिय स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में हर सप्ताह पुस्तकालय में जाकर पढ़ो ।

देश में मनाए जाने वाले त्योहारों की माहवार सूची बनाओ ।

पुनरावर्तन-२

१. किसी महिला क्रांतिकारी की प्रेरक कहानी सुनाओ ।

२. अपने गाँव/शहर के प्रमुख व्यवसाय संबंधी जानकारी बताओ ।

३. महादेवी वर्मा लिखित 'मेरा परिवार' से कोई एक रेखाचित्र पढ़ो ।

४. किसी भी विषय पर ७-८ पंक्तियों की कविता लिखो ।

५. निम्न सारिणी के स्तंभों में दिए शब्दों से अर्थपूर्ण वाक्य बनाओ :

(संज्ञा, सर्वनाम के रूप में जहाँ आवश्यक हो वहाँ परिवर्तन कर सकते हैं ।) जैसे : हमने पुस्तकें पढ़ीं।

(१)	(२)	(३)
मैं, हम, तू	रोटी, चिड़िया	खाता हूँ/खाते हैं /खाता है ।
तुम, आप	बच्चा, फल	है/हो ।
स्वयं, यह	पुस्तक	खिलाता हूँ ।
वह, ये, वे	रोटियाँ, चिड़ियाँ, पुस्तकें	खिलाते हैं ।
कौन, क्या		खिलवाता है ।
कोई, कुछ		पढ़ी/पढ़ीं ।
जो		छोड़ दिया ।
यही, वही		पढ़ती हूँ /पढ़ते हैं ।
		पढ़ते हो ।

उपक्रम/प्रकल्प

अपने बड़ों से मूल्यों पर आधारित कहानियाँ नियमित सुनो ।

हिंदी में नया क्या सीखा, सप्ताह के अंत में अपने अभिभावक/बड़ों को बताओ ।

अब तक पाठ्यपुस्तक में आए नए शब्दों के अर्थ शब्दकोश में पढ़ो ।

महान विभूतियों की जयंती, पुण्यतिथि की सूची महीनों के अनुसार बनाओ ।

✲ आओ खेलें

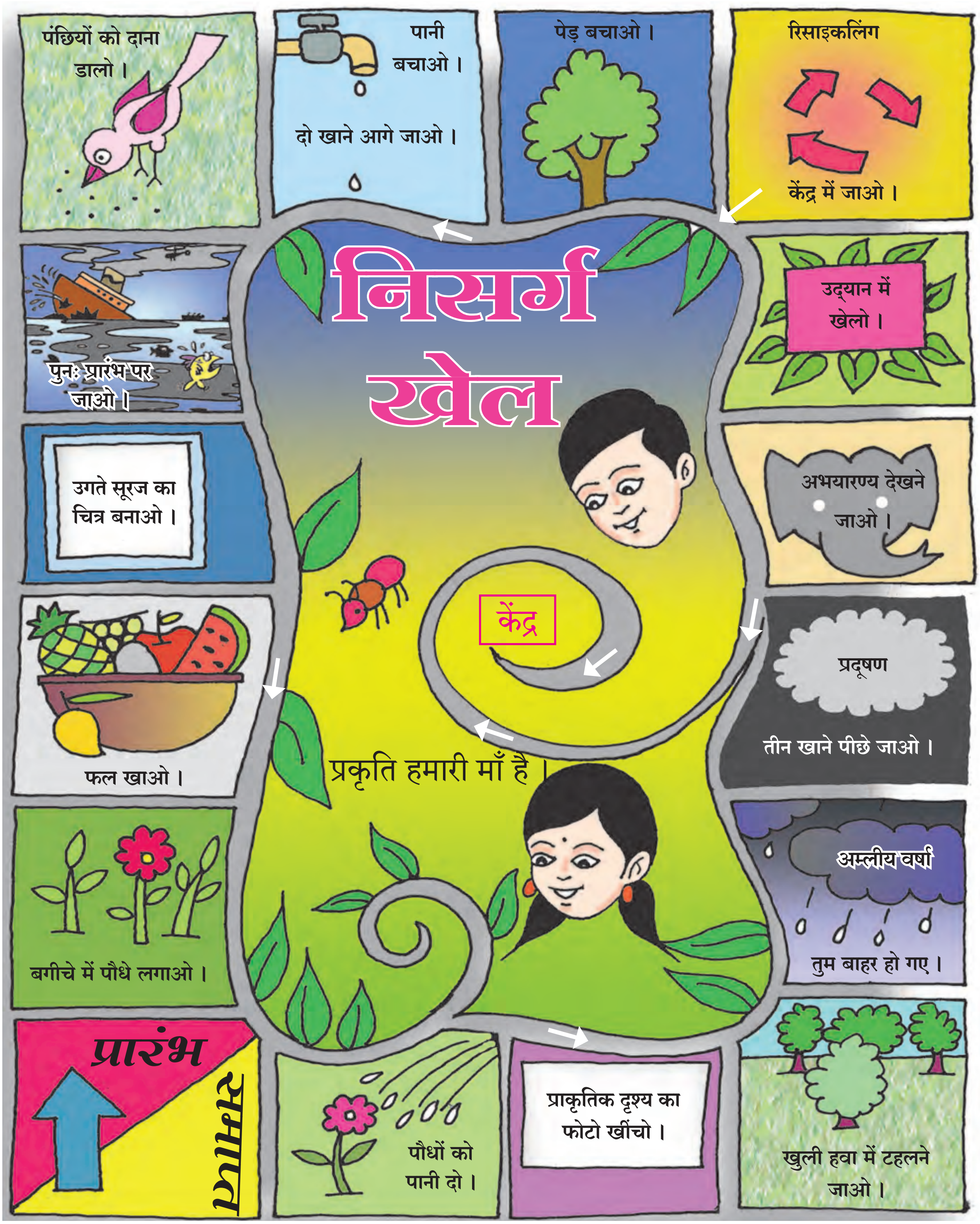

❑ **सूचना :** अलग-अलग रंगों की गोटियाँ और पासा लेने के लिए कहें । पासा फेंककर जितने अंक आए उतने घर आगे बढ़ना है । ४-५ के गुट में सभी को बारी-बारी से खेलना है । खाने में दी गई सूचना के अनुसार अभिनय करवाएँ और उसपर पाँच वाक्य कहलवाएँ ।

● देखो, समझो और बताओ :

१. संगणक

❑ दिए गए चित्र का सूक्ष्म निरीक्षण कराएँ । संगणक के विभिन्न भागों के नाम पूछें । इसके विविध भागों के सामान्य कार्यों और विशेषताओं पर चर्चा करें । संगणक के अति प्रयोग से होने वाली हानियाँ समझाएँ । संगणक का चित्र बनाने के लिए प्रेरित करें ।